हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

RNI NO - CTHIN/25/A0716

मूक पत्रिका

निष्पक्ष, निर्भीक, स्वतंत्र आवाज...

वर्ष - 02 अंक - 216 बेमेतरा, मंगलवार 31 मार्च 2026 रायपुर एवं बेमेतरा से प्रकाशित कुल पेज - 08 मूल्य - 5 रूपये डाक पंजीयन- दुर्ग/1743290201/2025-27

नक्सलवाद की जड़ें उखाड़ने का संकल्प पूरा हो रहा

आदिवासियों की आवाज अब संसद तक पहुंची-अमित शाह

नई दिल्ली। एजेंसी

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने देश के अंदर से नक्सलवाद के खात्मे के लिए 31 मार्च की समयसीमा तय की है। अब यह डेडलाइन करीब आ गई है। इस समयसीमा के ठीक एक दिन पहले लोकसभा में इस दिशा में किए गए प्रयासों पर चर्चा हुई। लोकसभा में नक्सलवाद के मुद्दे पर नियम 193 के तहत चर्चा की शुरुआत शिवसेना (एकनाथ शिंदे) के सांसद डॉक्टर श्रीकांत शिंदे ने की है। नक्सलवाद के मुद्दे पर लोकसभा में बोलते हुए अमित शाह ने काह कि रेड कॉरिडोर में गिने जाने वाले 12 राज्य और आदिवासियों की ओर से आपका चर्चा के लिए धन्यवाद देता हूं। वे सालों से चाहते थे कि यह व्यवस्था एकबार संसद में उजागर हो और पूरी दुनिया उसको जाने। मगर लंबे समय तक उसको मौका नहीं दिया गया। गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि ये जो हथियारी मूवमेंट के वकील बने हुए हैं, कहते हैं हमारे साथ अन्याय हो रहा है। अन्याय हो रहा है तो उसके लिए व्यवस्थाएं बनी हैं। अदालतें बनी हैं। हथियार उठा लोगे। संविधान को नहीं मानोगे। ऐसा नहीं चलेगा। ये नरेंद्र मोदी की सरकार है। जो भी हथियार उठाएगा, उसका यही अंजाम होगा। उन्होंने आगे कहा कि बस्तर में लाल आतंक की परछाई थी, इसलिए वहां विकास नहीं पहुंचा। राजकुमार रौत जैसे साथी कह रहे हैं आदिवासी का विकास नहीं हुआ। अमित शाह ने कहा कि 70 में से 60

साल तो सरकार कांग्रेस की रही। फिर क्यों विकास नहीं हुआ। आपने क्यों नहीं किया विकास आज आप हिसाब मांग रहे हो। मैं पूरा बताऊंगा। वहां करोड़ों लोग गरीबी में वर्षों तक जीते रहे, किसी ने चिंता नहीं की। 20 हजार युवा मारे गए, कई दिव्यांग बन गए और उन तक विकास नहीं पहुंचा। कौन जिम्मेदार है। क्या देश की सबसे बड़ी पंचायत को इस पर चिंतन नहीं करना चाहिए। नक्सलवाद का मूल कारण विकास की डिमांड नहीं, एक आइडियोलॉजी है। जिसे एक राष्ट्रपति चुनाव के कारण इंदिरा गांधी ने स्वीकार कर लिया। प्रधानमंत्री मनमोहन ने स्वीकारा था। देश की आंतरिक सुरक्षा की सबसे बड़ी समस्या हथियारी माओवादी है। मगर कुछ नहीं किया गया। 2014 में परिवर्तन हुआ। मोदी जी के शासन के अंदर कई समस्याओं का समाधान हुआ। धारा 370 हट गई, 35ए हट गई, राम जन्मभूमि का मंदिर बन गया। जीएसटी इस देश में वास्तविकता बन गई। विधाई मंडल में मातृ शक्ति को 33 प्रतिशत का आरक्षण दिया गया। कई सारे बड़े काम जो आजादी से इस देश की जनता चाहती थी।

हथियार डालना हार नहीं, विचारधारा अभी जिंदा-ओवैसी

लोकसभा में नक्सलवाद और लेफ्ट विंग एक्सट्रीमिज्म पर चर्चा के दौरान एआईएमआईएम प्रमुख ओवैसी ने सरकार के दावों पर सवाल उठाते हुए कहा कि सिर्फहथियार डालने से समस्या खत्म नहीं होती, क्योंकि विचारधारा अभी भी जिंदा है। उन्होंने कहा कि जो लोग आज सरेंडर कर रहे हैं, उन्होंने कहीं भी अपनी विचारधारा को त्यागने की बात नहीं कही है। ओवैसी ने ऐतिहासिक उदाहरण देते हुए कहा कि 1977 में भी सीपीआई (एमएल) ने कुछ समय के लिए अपने सशस्त्र संघर्ष को रोका था, लेकिन बाद में फिर हथियार उठा लिए। उन्होंने कहा कि यह समझना जरूरी है कि यह स्थायी समाधान नहीं बल्कि एक टैक्टिकल रिट्रीट हो सकता है। उन्होंने चारू मजूमदार का जिक्र करते हुए कहा कि नक्सल आंदोलन की जड़ें गहरी हैं और इसे केवल सैन्य कार्रवाई से खत्म नहीं किया जा सकता।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ईरान को चेतावनी

जल्द समझौता नहीं हुआ तो तबाह कर देंगे खर्ग द्वीप......

वॉशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को कहा कि उनका देश ईरान में अपने सैन्य अभियानों को समाप्त करने के लिए एक और अधिक समझदार शासन के साथ गंभीरता से बातचीत कर रहा है। उन्होंने कहा कि इस दिशा में काफी प्रगति हुई है। लेकिन अगर किसी भी वजह जल्द ही कोई समझौता नहीं हो पाता है (जिसकी बहुत अधिक संभावना है)और अगर होर्मुजलडमरूमध्य व्यापार के लिए नहीं खुलता है, तो हम उनके सभी बिजली उत्पादन संयंत्रों, तेल कुओं और खर्ग द्वीप को पूरी तरह तबाह कर देंगे, जिन्हें हमने जानबूझकर अभी तक छुआ नहीं है। उन्होंने लिखा, यह

उन असंख्य सैनिकों और अन्य लोगों का बदला होगा, जिन्हें ईरान ने पिछले शासन के 47 वर्षों के आतंक के दौरान बेरहमी से मार डाला था। इस मामले पर ध्यान देने के धन्यवाद। इससे पहले स्पेन ने अमेरिकी लड़ाकू विमानों के लिए अपने हवाई क्षेत्र को बंद करने का एलान किया।

ईरान को एक और करारा झटका!

लारीजानी के बाद अब नौसेना कमांडर तंगसीरी की भी गई जान; तेहरान ने की मौत की पुष्टि....

नई दिल्ली। मिडिल ईस्ट में जारी भीषण युद्ध के बीच ईरान को एक और अपूरणीय क्षति हुई है। ईरान ने आधिकारिक तौर पर अपने इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स के नौसेना कमांडर अलीरेजा तंगसीरी की मौत की पुष्टि कर दी है। इजरायल ने पिछले हफ्ते ही दावा किया था कि उन्होंने एक लक्षित सैन्य ऑपरेशन में तंगसीरी को मार गिराया है। ईरान के सरकारी मीडिया संस्थान आईआरआईबी ने अब इस खबर पर मुहर लगा दी है कि तंगसीरी हमले के दौरान आई गंभीर चोटों से उबर नहीं पाए और उनकी जान चली गई। अलीरेजा तंगसीरी साल 2018 से आईआरजीसी के नौसेना प्रमुख के महत्वपूर्ण पद पर तैनात थे। उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'स्ट्रेट ऑफ होर्मुज' की सुरक्षा रणनीति का मास्टरमाइंड माना जाता था। खाड़ी युद्ध के दौरान अमेरिका और इजरायल के जहाजों को चुनौती देने और ईरानी समुद्री सीमाओं की रक्षा करने में उनकी भूमिका सबसे अहम रही थी। रिपोर्टों के अनुसार, तंगसीरी 26 मार्च को बंदर अब्बास में हुए एक इजरायली हमले के दौरान गंभीर रूप से घायल हो गए थे। मौजूदा युद्ध ईरान के शीर्ष सैन्य और राजनीतिक नेतृत्व के लिए काल साबित हो रहा है। अलीरेजा तंगसीरी की मौत इस कड़ी में नया नाम है, लेकिन इससे पहले भी कई दिग्गज हस्तियां मारी जा चुकी हैं। युद्ध की शुरुआत में ही, 28 फरवरी को अमेरिका और

इजरायल की संयुक्त कार्रवाई में ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत हो गई थी। इसके अलावा, 28 फरवरी को ही आईआरजीसी के कमांडर-इन-चीफ मोहम्मद पाकपुर और वायुसेना अधिकारी अजीज नासिरजादेह भी तेहरान में हुए हमलों में मारे गए थे। 17 मार्च को सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव अली लारीजानी और 18 मार्च को खुफिया मंत्री इस्माइल खतीब ने भी अपनी जान गंवाई थी। ईरान और इजरायल के बीच छिड़े इस महायुद्ध का असर अब दुनिया भर की जेब पर पड़ने लगा है। सामरिक रूप से महत्वपूर्ण स्ट्रेट ऑफहोर्मुज में तनाव बढ़ने के कारण वैश्विक तेल आपूर्ति बाधित होने का खतरा पैदा हो गया है। इसका सीधा असर भारत पर भी पड़ा है जहां डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपया ऐतिहासिक निचले स्तर पर गिरकर ?95 के पार पहुंच गया है।

बिहार में नीतीश राज खत्म!

मुख्यमंत्री बनने की रेस में तीन नाम, सबसे आगे सम्राट चौधरी

नई दिल्ली/ एजेंसी

बिहार की सियासत में सोमवार का सूरज एक बड़े बदलाव की आहट लेकर आया है। दशकों तक बिहार की राजनीति के धुरी रहे नीतीश कुमार अब पटना से दिल्ली की ओर रुख कर रहे हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को विधान परिषद की सदस्यता से अपना इस्तीफा सौंप दिया है। दरअसल, वे 16 मार्च को ही राज्यसभा के लिए निर्विरोध निर्वाचित हुए थे और 10 अप्रैल से उनका कार्यकाल शुरू होने वाला है। जैसे ही नीतीश ने इस्तीफा दिया, पूरे सूबे में एक ही चर्चा आम हो गई है- अब बिहार का अगला

मुख्यमंत्री कौन होगा? यह सवाल केवल राजनीतिक गलियारों तक सीमित नहीं है, बल्कि बिहार का हर नागरिक अब अपने भविष्य और नई सरकार की नीतियों को लेकर उत्सुक है। बिहार में इस बार पहली बार भाजपा का अपना मुख्यमंत्री बनने की प्रबल संभावना जताई जा रही है। इस रेस में सबसे पहला और मजबूत नाम सम्राट चौधरी का उभरकर सामने आ रहा है। वर्तमान में बिहार के उपमुख्यमंत्री और भाजपा विधायक दल के नेता सम्राट चौधरी कुशवाहा समाज के एक बड़े चेहरे माने जाते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि उन्हें सीएम बनाकर भाजपा एक बड़ा 'जाति कार्ड' खेल सकती है। चूंकि बिहार में यादव और कुर्मी समुदाय से मुख्यमंत्री रह चुके हैं, ऐसे में 4.27 प्रतिशत से अधिक आबादी वाले कुशवाहा समुदाय को साधने के लिए सम्राट चौधरी सबसे उपयुक्त चेहरा हो सकते हैं।

जोधपुर में अवैध गैस कारोबार पर पुलिस की बड़ी कार्रवाई, 24 सिलेंडर जब्त

जोधपुर। जोधपुर पश्चिम पुलिस ने अवैध गैस भंडारण, परिवहन और कालाबाजारी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए 24 कॉमर्शियल गैस सिलेंडर और एक लोडिंग टैक्सी जब्त की है। जोधपुर पुलिस के निर्देश पर थाना झंवर की टीम ने नाकाबंदी कर संदिग्ध वाहन ऋ्छ19त्र ll0271 को रोका। जांच के दौरान वाहन में भरे हुए गैस सिलेंडर पाए गए। पुलिस ने मौके से राकेश बिश्नोई (25) और मालूराम उर्फ मलूराम (41) को गिरफ्तार किया। दोनों आरोपी गैस की अवैध सप्लाई और कालाबाजारी में लिप्त बताए जा रहे हैं। इस कार्रवाई का नेतृत्व थानाधिकारी प्रहलाद सिंह ने किया। मामले में आवश्यक वस्तु अधिनियम और बीएनएस की धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

सीएम ममता बनर्जी का तीखा प्रहार

चुनाव खत्म होते ही गैस-कैश देना बंद कर देगी भाजपा......

कोलकाता/ एजेंसी

पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव की सरगर्मी के बीच मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बेलदा में एक बड़ी चुनावी रैली की। इस रैली में उन्होंने भाजपा की नीतियों पर जमकर निशाना साधा। ममता बनर्जी ने जनता को चेतावनी देते हुए कहा, भाजपा चुनाव खत्म होते ही गैस और कैश देना बंद कर देगी। उन्होंने इसे भाजपा की एक सोची-समझी चाल और चुनावी खेल करार दिया। ममता बनर्जी ने भाजपा पर समाज को बांटने का गंभीर आरोप भी लगाया। उन्होंने कहा कि भाजपा समाज के विभिन्न

वर्गों के बीच नफरत और झगड़े पैदा कर रही है। मुख्यमंत्री के अनुसार, भाजपा इस तनावपूर्ण स्थिति का फायदा उठाकर देश को लूटना चाहती है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे भाजपा के बहकावे में न आएं। ममता बनर्जी ने साफ किया कि भाजपा केवल सत्ता के लिए लोगों को आपस में लड़ाने का काम कर रही है और चुनाव के बाद वह अपने वादों से मुकर जाएगी। ममता बनर्जी ने गृह मंत्री अमित शाह की राजनीतिक चार्जशीट का जवाब देते हुए कहा, पहली चार्जशीट तो प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह के खिलाफ होनी चाहिए, जो दंगे भड़काकर सत्ता में आए। ममता बनर्जी ने कहा कि भाजपा हिंदू-मुस्लिम से लेकर प्रशासन और पुलिस तक को बांटने की कोशिश कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग ने भाजपा के कहने पर कई काबिल अधिकारियों को हटा दिया है, जो अधिकारियों का अपमान है।

विजयवाड़ा में 9 नक्सलियों का सरेंडर

36 साल से छिपे मास्टरमाइंड माओवादी सुरेश ने डाली अपनी बंदूकें

नई दिल्ली/ एजेंसी

आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में सुरक्षाबलों को एक बहुत बड़ी कामयाबी हाथ लगी है जहां 9 नक्सलियों ने एक साथ पुलिस के सामने समर्पण कर दिया है। इन सरेंडर करने वाले नक्सलियों में सबसे प्रमुख नाम शीर्ष माओवादी कमांडर चेल्लूरी नारायण राव उर्फसुरेश का है जो पिछले कई दशकों से पुलिस की आँखों में धूल झोंक रहा था। इस घटना के बाद पुलिस महानिदेशक हरीश कुमार गुप्ता ने बताया कि राज्य में अब माओवादी गतिविधियां लगभग खत्म हो चुकी हैं और यह शांति की ओर एक बड़ा कदम है। विजयवाड़ा में नक्सलियों के आत्मसमर्पण की इस खबर ने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर खींचा है क्योंकि इसमें शामिल कमांडर पर कई गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। विजयवाड़ा में सरेंडर करने वाले 9 नक्सलियों में से चेल्लूरी नारायण राव उर्फसुरेश की कहानी सबसे ज्यादा चौंकाने वाली और रहस्यमयी मानी जा रही है। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार सुरेश पिछले 36 सालों से अंडरग्राउंड रहकर अपनी नक्सली गतिविधियों को अंजाम दे रहा था और वह कभी पुलिस की पकड़ में नहीं आया। वह ष्टक्क्ष्ठ (माओवादी) की सेंट्रल कमेटी का सदस्य और आंध्र-ओडिशा बॉर्डर स्पेशल जोनल कमेटी का सचिव भी रहा है जिससे उसकी बड़ी ताकत का अंदाजा लगाया जा सकता है। सुरेश का आपराधिक इतिहास बहुत ही खौफनाक रहा है क्योंकि उस पर आंध्र प्रदेश और ओडिशा के कई बड़े हमलों में शामिल

होने का गहरा संदेह पुलिस को है। विशेष रूप से 2018 में पूर्व विधायक किदारी सर्वेश्वर राव और पूर्व विधायक सिवरी सोमेश्वर राव की निर्मम हत्या के मामले में वह मुख्य आरोपी बनाया गया था। पुलिस बलों पर घात लगाकर किए गए कई हमलों यानी एम्बुश में भी उसका नाम प्रमुखता से शामिल रहा है जिससे वह सुरक्षाबलों के लिए बड़ा सिरदर्द बना हुआ था। नक्सलियों के इस सरेंडर के दौरान पुलिस ने उनके पास से आधुनिक और घातक हथियारों का एक बड़ा जखीरा भी बरामद करने में बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने उनके पास से 1 इंसास राइफल, 2 बीजीएल हथियार, 5 '.303' राइफल्स और 5 एसबीबीएल गन समेत कई संचार उपकरण और विस्फोटक जब्त किए हैं। यह बरामदगी दर्शाती है कि ये नक्सली किस कदर हथियारों से लैस थे और सुरक्षाबलों के लिए एक बड़ी चुनौती बने हुए थे जो अब पूरी तरह खत्म हो गई है। आंध्र प्रदेश सरकार की 'सरेंडर और पुनर्वास नीति' के तहत इन सभी पूर्व नक्सलियों को मुख्यधारा में जोड़ने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। कमांडर सुरेश को उसके सरेंडर के बदले 25 लाख रुपये की राशि प्रदान की जाएगी जबकि अन्य सदस्यों को उनकी रैंक के अनुसार 1 लाख से 5 लाख रुपये मिलेंगे।

आंध्र प्रदेश में नक्सलवाद का अंत-डीजीपी हरीश

डीजीपी हरीश कुमार गुप्ता ने पुलिस ब्रीफिंग में पुष्टि की है कि अब आंध्र प्रदेश में भूमिगत माओवादी गतिविधियां पूरी तरह से 'शून्य' के स्तर पर पहुंच गई हैं। उन्होंने बताया कि सात अलग-अलग मुठभेड़ों में 8 माओवादी मारे गए थे और अब तक 81 माओवादियों को गिरफ्तार किया जा चुका है जबकि 106 ने सरेंडर किया है। सरकार का लक्ष्य है कि इन लोगों को सही दिशा में ले जाया जाए और समाज के विकास में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जाए ताकि हिंसा का रास्ता हमेशा के लिए बंद हो सके।

संक्षिप्त समाचार

आगरा पुलिस ने बच्ची की हत्या के मामले में फरार चल रहे इनामी को मुठभेड़ में किया ढेर

आगरा। आगरा के थाना ताजगंज स्थित गोबर चौकी में 24 मार्च को बच्ची की हत्या में फरार चल रहे 25000 रुपए के इनामी सुनील को पुलिस ने मुठभेड़ में ढेर कर दिया है। वहीं, एक दरोगा भी गोली लगने से घायल हो गए हैं, जिनका इलाज अस्पताल में चल रहा है। डीसीपी सिटी सैयद अली अब्बास ने बताया कि आठ वर्षीय बच्ची की निर्मम हत्या के मामले में फरार सुनील कुमार के बारे में शनिवार की सुबह सूचना मिली कि बमरौली कटरा क्षेत्र में मौजूद है। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने क्षेत्र की घेराबंदी की थी। अपने आपको घिरता देख आरोपी ने पुलिस के ऊपर कई राउंड फायर कर दिया, जिसमें एक दरोगा भी घायल हो गए। पुलिस ने जवाबी फायरिंग की, जिसमें सुनील को गोली लग गई। पुलिस ने तत्काल सुनील को अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

युवा अपने जीवन को सही दिशा में आगे बढ़ाएं और देश-प्रदेश के विकास में दें योगदान

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि तन और मन से स्वस्थ रहना सुखी जीवन का मूल आधार है। हमारा देश युवाओं का देश है और इसी युवा तरुणाई को सिंचित रखने के लिए स्वस्थ रहना जरूरी है। उन्होंने कहा कि जब युवा बढ़ेगा तभी समाज और राष्ट्र आगे बढ़ेगा। ऐसे में युवा अपने जीवन को सही दिशा में आगे बढ़ाएं और अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते हुए देश-प्रदेश के विकास में योगदान दें। शर्मा रविवार को जयपुर के अजमेर रोड स्थित महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी में द टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित हाफ मैराथन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि युवाओं के लिए सरकारी और निजी नौकरियों के साथ स्वरोजगार के अधिकाधिक अवसर प्रदान कर राज्य सरकार ने सवा दो साल में उनका भविष्य सुरक्षित करने का कार्य किया है। शर्मा ने आह्वान करते हुए कहा कि केंद्र और राज्य में सरकार की योजनाएं और नीतियां युवाओं पर केंद्रीत हैं। युवा इनका स्वयं भी लाभ उठाएं और अंतिम छोर तक बैठे व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने का प्रयास करें।

मथुरा विवाद इलाहाबाद हाईकोर्ट में सुनवाई टली, अब 10 अप्रैल को होगी अगली सुनवाई

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट में मथुरा के श्रीकृष्ण जन्मभूमि और शाही ईदगाह मस्जिद विवाद से जुड़े मामलों की प्रस्तावित सुनवाई टाल दी गई है। अब इस मामले पर अगली सुनवाई 10 अप्रैल को होगी। इस बहुचर्चित और संवेदनशील मामले पर देशभर की नजरें बनी हुई हैं। हाईकोर्ट में पिछले कई महीनों से इस विवाद से संबंधित याचिकाओं पर सुनवाई जारी है। हिंदू पक्ष की ओर से दायर याचिकाओं में शाही ईदगाह मस्जिद को हटाने और विवादित भूमि पर अधिकार की मांग की गई है। अदालत अब 10 अप्रैल को इन याचिकाओं पर आगे की प्रक्रिया तय कर सकती है। वर्तमान में हाईकोर्ट में हिंदू पक्ष की कुल 18 याचिकाएं लंबित हैं।

आश्रम-छात्रावासों में नियमों का कड़ाई से पालन हो : कलेक्टर

नए सत्र के संचालन को लेकर अधीक्षक-अधीक्षिकाओं की समीक्षा बैठक, कई अहम निर्देश जारी

बीजापुर/मूक पत्रिका

आशीष पदमवार। जिले में संचालित आश्रम-छात्रावासों की व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए कलेक्टर संबित मिश्रा ने सोमवार को इन्द्रावती सभाकक्ष में समीक्षा बैठक ली। बैठक में नए शैक्षणिक सत्र 2026-27 की तैयारियों को लेकर विस्तृत दिशा-निर्देश दिए गए। बैठक में जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी नम्रता चौबे, सहायक आयुक्त आदिवासी विकास देवेन्द्र सिंह सहित सभी विकासखंडों के मंडल संयोजक, अधीक्षक-अधीक्षिकाएं और विभागीय अधिकारी मौजूद रहे। कलेक्टर ने स्पष्ट किया कि जिन बच्चों के गांव में शासकीय स्कूल उपलब्ध हैं, उन्हें वहीं प्रवेश दिया जाए। ऐसे बच्चों को आश्रम-छात्रावास में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। वहीं, शाला त्यागी और दूरस्थ क्षेत्रों के बच्चों को प्राथमिकता के आधार पर जिला कार्यालय की अनुमति से प्रवेश दिया जा सकेगा। अन्य जिलों के जो छात्र वर्तमान में आश्रम-छात्रावासों में रह रहे हैं, उन्हें नए सत्र में उनके मूल जिले में स्थानांतरित करने के निर्देश दिए गए हैं। इसकी सूची 8 अप्रैल 2026 तक कार्यालय में प्रस्तुत करने को कहा गया है। साथ ही यह भी साफ किया गया कि किसी भी स्थिति में स्वीकृत सीट से अधिक छात्रों को प्रवेश नहीं दिया जाए। सुरक्षा व्यवस्था पर जोर देते हुए कलेक्टर ने निर्देश दिए कि संस्था में आने-जाने वाले हर व्यक्ति का विवरण आगंतुक पंजी में दर्ज किया जाए। लंबे समय से अनुपस्थित छात्रों के पालकों से संपर्क कर उन्हें वापस लाने के प्रयास किए जाएं, अन्यथा नियमानुसार कार्रवाई की जाए। स्वास्थ्य और खानपान व्यवस्था को लेकर भी सख्त निर्देश दिए गए।

अवकाश के बाद लौटने वाले सभी छात्रों का अनिवार्य स्वास्थ्य परीक्षण कराने, विशेषकर कन्या छात्रावासों में, पर जोर दिया गया। वहीं, भोजन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिदिन भोजन का स्वाद परीक्षण कर उसका विवरण पंजी में दर्ज करने को कहा गया। कलेक्टर ने स्टॉक पंजी को अद्यतन रखने और खराब सामग्री के नियमानुसार अपलेखन की प्रक्रिया अपनाने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि ग्रीष्मकालीन अवकाश में भी शासन द्वारा तय तिथि के अनुसार ही छात्रों को अवकाश दिया जाए। अंत में कलेक्टर ने सभी अधिकारियों को निर्देशों का सख्ती से पालन करने और आश्रम-छात्रावासों के संचालन में किसी भी प्रकार की अनियमितता न होने देने की हिदायत दी।

संगमपल्ली में शराब दुकान खोलने के प्रस्ताव पर ग्रामीणों का विरोध तेज

ग्राम सभा बिना फर्जी प्रस्ताव का आरोप, कलेक्टर से हस्तक्षेप की मांग

बीजापुर/मूक पत्रिका

आशीष पदमवार। भोपालपटनम विकासखंड के संगमपल्ली गांव एवं ग्राम पंचायत में प्रस्तावित शासकीय विदेशी मदिरा दुकान को लेकर ग्रामीणों का विरोध तेज हो गया है। सोमवार को बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने कलेक्टर से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपते हुए इस प्रस्ताव को निरस्त करने की मांग की। ग्रामीणों का कहना है कि सरपंच और सचिव द्वारा ग्राम सभा आयोजित किए बिना ही शराब दुकान खोलने के लिए फर्जी प्रस्ताव तैयार किया गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि इस महत्वपूर्ण निर्णय में ग्रामवासियों की सहमति नहीं ली गई, जो पंचायत व्यवस्था और नियमों के खिलाफ है।

ग्रामीणों ने आशंका जताई कि गांव में शराब दुकान खुलने से शराबखोरी बढ़ेगी, जिससे सामाजिक वातावरण प्रभावित होगा और हिंसा की घटनाओं में वृद्धि हो सकती है। इसके साथ ही उन्होंने पंचायत क्षेत्र और जमीन पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को लेकर भी चिंता व्यक्त की। ग्रामीणों ने कलेक्टर से मांग की है कि मामले की निष्पक्ष जांच कराई जाए और ग्राम सभा की अनुमति के बिना किसी भी स्थिति में शराब दुकान खोलने की प्रक्रिया पर रोक लगाई जाए। ज्ञापन सौंपने पहुंचे ग्रामीणों में उप सरपंच सरस्वती सोढ़ी, वल्वा किशन, वल्वा विनोदा, सोढ़ी गौरैया, गणपत, वल्वा बकैया, पूर्व सरपंच सुनील उद्दे सहित बड़ी संख्या में महिला-पुरुष ग्रामीण शामिल रहे।

एकलव्य विद्यालयों में हिंदू त्योहारों पर अवकाश बढ़ाने की मांग, प्रधानमंत्री को भेजा गया प्रार्थना पत्र

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय

बस्तर/मूक पत्रिका

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों (EMRS) में हिंदू त्योहारों पर राजपत्रित अवकाश बढ़ाने की मांग को लेकर एक पत्र प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भेजा गया है। पत्र में वर्तमान अवकाश व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए पुनर्विचार की आवश्यकता बताई गई है। एकलव्य आवासीय विद्यालय कोडेनार के प्रधानाचार्य जी. शिवा रेड्डी द्वारा भेजे गए पत्र में उल्लेख किया गया है कि राष्ट्रीय आदिवासी छात्र शिक्षा समिति (ह्श्वस्ञ्स्), नई दिल्ली के तहत संचालित एकलव्य विद्यालयों में सालभर में निर्धारित 14 राजपत्रित अवकाशों में हिंदू त्योहारों की छुट्टियां बहुत कम हैं। होली, नवरात्रि, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, लोहड़ी, छठ जैसे प्रमुख त्योहारों के लिए पर्याप्त अवकाश नहीं होने से छात्रों और स्टाफ को परेशानी का सामना करना पड़ता है। पत्र में कहा गया है कि देश में बड़ी संख्या में मनाए जाने वाले इन त्योहारों के बावजूद अवकाश का प्रावधान सीमित है, जबकि अन्य समुदायों के त्योहारों पर अपेक्षाकृत अधिक छुट्टियां मिलती हैं। इसे असंतुलित बताते हुए सभी समुदायों के साथ समान व्यवहार की मांग की गई है। प्रार्थना पत्र में यह भी उल्लेख किया गया है कि कई राज्यों में नवरात्र जैसे बड़े पर्व पर भी अवकाश नहीं होने से धार्मिक आस्था के अनुरूप पूजा-अर्चना में बाधा आती है। ऐसे में मुख्य हिंदू त्योहारों पर भी राजपत्रित अवकाश घोषित करने की आवश्यकता बताई गई है, ताकि छात्र और कर्मचारी अपने परिवार के साथ त्योहार मना सकें। अंत में प्रधानमंत्री से हस्तक्षेप कर अवकाश नीति में संशोधन करने और सभी समुदायों के त्योहारों को संतुलित रूप से शामिल करने की मांग की गई है।

शादी का वादा कर मुकरने वाले दुष्कर्म के आरोपी को पुलिस ने माकड़ीखुना से दबोचा'

शादी का झांसा देकर 12 वर्षों तक किया शारीरिक शोषण,

कांकेर/मूक पत्रिका

विक्रम ठाकुर /:-कांकेर उत्तर बस्तर कांकेर की सिटी कोतवाली पुलिस ने शादी का झांसा देकर लंबे समय तक दुष्कर्म करने वाले एक आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपी पिछले कई वर्षों से प्रार्थिया का शारीरिक शोषण कर रहा था और शादी की बात आने पर टालमटोल कर रहा था। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, प्रार्थिया और आरोपी प्रवेश कुमार यादव (32 वर्ष) की पहचान नंदनमारा स्थित एक वृद्धाश्रम में काम के दौरान हुई थी। आरोपी ने प्रार्थिया को शादी का झांसा दिया और 24 मार्च 2013 से उसके साथ जबरन शारीरिक संबंध बनाना शुरू किया। यह सिलसिला 20 अक्टूबर 2025 तक चलता रहा। जब प्रार्थिया ने विवाह के लिए दबाव बनाया, तो आरोपी अपने वादे से मुकर गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक निखिल राखेचा के निर्देशन में एक विशेष टीम का गठन किया गया। पुलिस को सूचना मिली कि आरोपी ग्राम माकड़ीखुना में ड्राइवर के रूप में कार्य कर रहा है। टीम ने घेराबंदी कर आरोपी को हिरासत में लिया, जहां उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया। आरोपी को धारा 69 बीएनएस के तहत गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है। पुलिस टीमः इस कार्रवाई में थाना प्रभारी प्रतीक दादासाहेब (भा.पु.से.), उपनिरीक्षक सुरेंद्र मानिकपुरी, सउनि भुनेश्वरी भगत और उनकी टीम का विशेष योगदान रहा।

जिला दंडाधिकारी डॉ संजय कन्नौजे ने चंद्रशेखर अंगारे को किया जिलाबदर

सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिला सहित पड़ोसी जिलों की सीमाओं में प्रवेश पर 1 वर्ष तक प्रतिबंध

सारंगढ़ बिलाईगढ. जिला दंडाधिकारी डॉ संजय कन्नौजे ने आरोपी चंद्रशेखर अंगारे पिता शम्भू लाल अंगारे निवासी शुक्लाभाटा (सोहागपुर) बिलाईगढ़, थाना सरसींवा को गुंडागर्दी, गाली, मारपीट, बलवा, जुआ खेलने, अवैध शराब बेचने पर 16 बार विभिन्न अपराध में एफआईआर दर्ज और 13 बार अपराध पर प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करते हुए छत्तीसगढ़ राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 5 (क) (ख) के तहत जिला सारंगढ़ बिलाईगढ़ एवं समीपवर्ती जिला रायगढ़, सक्ती, जांजगीर चांपा, बलौदाबाजार भाटापारा व महासमुंद की सीमाओं में 1 वर्ष की काल अवधि के लिए चंद्रशेखर अंगारे को जिला बदर किया है और इन सभी जिलों की सीमाओं में निष्कासित अवधि तक किसी भी दशा में न्यायालय ने पूर्व अनुमति प्राप्ति के बिना प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया है।

नि :शुल्क शिक्षा के लिए आरटीई में ऑनलाइन आवेदन 31 मार्च तक

सारंगढ़-बिलाईगढ़। शिक्षा का अधिकार (आरटीई) के तहत जरूरतमंद और पात्र छात्रों को नर्सरी से क्लास - बारहवीं तक निःशुल्क शिक्षा दिया जाता है इसके लिए ऑनलाइन आवेदन 31 मार्च 2026 तक जमा किये जा सकते है, जिसका वेबसाईट आरटीई डॉट सीजी डॉट एन आई सी डॉट इन httpsÑ//rte.cg.nic.in/ है। इस अधिनियम के तहत 3 से 6ड्ढ वर्ष तक के बच्चे किसी भी प्राइवेट स्कूल के प्रारंभिक कक्षा मे प्रवेश ले सकते है।

अग्निवीर थलसेना हेतु ऑनलाईन आवेदन की अंतिम तिथि 1 अप्रैल

सारंगढ़ बिलाईगढ/मूक पत्रिका

भारतीय थल सेना द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के अविवाहित उम्मीदवारों के लिए अग्निवीर सैनिक के विभिन्न पदों पर भर्ती हेतु ऑनलाईन पंजीयन व आवेदन आमंत्रित की गई है। भर्ती के लिए इच्छुक एवं पात्र उम्मीदवार 1 अप्रैल 2026 तक थलसेना के वेबसाईट ज्वाइन इंडियन आर्मी डॉट एनआईसी डॉट इन (www.joinindianarmy.nic.in) के माध्यम से ऑनलाईन पंजीयन व आवेदन प्रस्तुत कर सकते है। अग्निवीर सैनिक भर्ती अंतर्गत जनरल ड्यूटी तकनीकी, ऑफिस असिस्टेंट, ट्रेडमैन, महिला सैन्य पुलिस एवं नियमित कैडर भर्ती, धर्म गुरू, नर्सिंग सहयोगी तथा हवलदार एसएसी के पदों भर्ती की जाएगी। जिसके लिए ऑनलाईन परीक्षा का आयोजन जून 2026 में संभावित है। भर्ती के लिए उम्मीदवार की आयु साढ़े 17 वर्ष से 21 वर्ष तथा शैक्षणिक योग्यता किसी भी मान्यता प्राप्त केन्द्रीय व राज्यकीय शिक्षा बोर्ड व संस्था से कक्षा 8वीं, 10वीं या 12वीं, आटीआई, इंजीनियरिंग डिप्लोमा उत्तीर्ण होना चाहिए। उम्मीदवार की ऊंचाई, वजन, सीना विभिन्न पदों हेत अलग-अलग है। अग्निवीर ऑफिस असिस्टेंट हेतु ऑनलाईन परीक्षा के समय टाईपिंग टेस्ट भी देना होगा। उम्मीदवार को चयन हेतु कम्प्यूटर आधारित ऑनलाईन लिखित परीक्षा, शारीरिक दक्षता परीक्षा एवं चिकित्सा परीक्षा उत्तीर्ण करना होगा। भर्ती की विस्तृत जानकारी थल सेना के वेबसाईट सेना भर्ती कार्यालय शहीद वीर नारायण क्रिकेट स्टेडियम के पास नवा रायपुर के दूरभाष क्रमांक 0771-2965212, 2965214 तथा कार्यालय जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र के अधिकारी रामजीत राम से मोबाइल नंबर 9424184279 से प्राप्त कर सकते हैं ।

शहर में भारी वाहनों की एंट्री पर लगेगा प्रतिबंध, ट्रैफिक व्यवस्था सुधारने बड़ा फैसला

बेमेतरा/मूक पत्रिका

शहर की यातायात व्यवस्था को सुगम, सुरक्षित और व्यवस्थित बनाने के उद्देश्य से नगर प्रशासन ने एक बड़ा निर्णय लिया है। नगर में लगातार बढ़ती ट्रैफिक समस्या, जाम और सड़क दुर्घटनाओं को देखते हुए अब शहर सीमा के भीतर भारी वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया जाएगा। इस महत्वपूर्ण निर्णय को लेकर आयोजित बैठक में नगर पालिका अध्यक्ष विजय सिन्हा, यातायात प्रभारी खलको, पीडब्ल्यूडी अधिकारी, व्यापारी संघ के प्रतिनिधि एवं जनप्रतिनिधियों ने भाग लिया। सभी की सहमति से यह ठोस कदम उठाया गया, जिससे शहरवासियों को ट्रैफिक जाम और दुर्घटनाओं से राहत मिलने की उम्मीद है।

बैठक में अधिकारियों ने बताया कि शहर के मुख्य मार्गों पर भारी वाहनों की आवाजाही के कारण अक्सर जाम की स्थिति बनती है, जिससे आम नागरिकों, स्कूली बच्चों और व्यापारियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। प्रतिबंध लागू होने के बाद यातायात व्यवस्था में सुधार आने और लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित होने की संभावना है।

इस निर्णय का मुख्य उद्देश्य शहर में ट्रैफिक जाम से राहत दिलाना, सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाना और आम नागरिकों की सुरक्षा को प्राथमिकता देना है। इसे शहर के विकास और बेहतर यातायात प्रबंधन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

इस अवसर पर नगर पालिका मुख्य अधिकारी नरेश वर्मा, सभापति गौरव साहू, आरटीओ भगत सिंह, तहसीलदार जयती पटेल, थाना प्रभारी गवाला यादव, केशव मोटवानी, चंदन सोनी, काके तेजवानी, राघवेन्द्र सिन्हा, गोलू साहू, उमेश साहू, पूना सिन्हा सहित अधिकारी, कर्मचारी एवं ड्राइवर संघ के सदस्य उपस्थित रहे।

कांकेरः लावारिसों का 'वारिस' बना 'जन सहयोग संस्था'किया 161वीं लावारिस लाश का अंतिम संस्कार

कांकेर/मूक पत्रिका

विक्रम ठाकुर / कांकेर शहर की प्रतिष्ठित समाजसेवी संस्था ÷जन सहयोग÷ ने एक बार फिर मानवता का परिचय देते हुए एक लावारिस लाश का विधि-विधान से अंतिम संस्कार किया। संस्था द्वारा अब तक कुल 161 लावारिस शवों का कफ़न-दफ़न किया जा चुका है। रविवार को थाना कोतवाली प्रभारी द्वारा संस्था के अध्यक्ष अजय पप्पू मोटवानी को एक पत्र प्राप्त हुआ था। पत्र के अनुसार, माकड़ी खुना गांव के पास बागड़ पहाड़ी के नीचे एक 35 वर्षीय अज्ञात व्यक्ति का करीब चार दिन पुराना शव मिला था। शिनाख्त न होने और पोस्टमार्टम के बाद, पुलिस प्रशासन ने अंतिम संस्कार के लिए संस्था से सहयोग मांगा।

23 वर्षा का निस्वाथ सेवा सफरः

संस्था अध्यक्ष अजय पप्पू मोटवानी और उनके सहयोगियों ने सोमवार सुबह शव का अंतिम संस्कार किया। गौरतलब है कि जन सहयोग संस्था पिछले 23 वर्षों से बिना किसी सार्वजनिक चंदे के यह पुनीत कार्य कर रही है। संस्था के इस सेवा भाव की आम जनता में काफी सराहना हो रही है।

इनका रहा विशेष सहयोगः

इस दौरान मनोज दुबे, राजेश चौहान, करण नेताम, शैलेंद्र देहारी, श्रीराम पटेल, राकेश रजक, अभिषेक नागवंशी, प्रभु सलाम और पप्पू साहू सहित पुलिस विभाग से प्रधान आरक्षक शिवकुमार विसरे व त्रिलोचन यादव का सराहनीय योगदान रहा।

विभागीय कार्यवाहियों पर माफियाओं को अतिरिक्त छूट क्यों? तुरंत चालान करके छोड़ देना और माफियाओं का तुरंत अपने काम पर वापस लग जाना..कानून व्यवस्था का खुला मजाक

खनिज विभाग में कार्यवाहियों को लेकर हर बार गोपनीयता का रहस्य क्या है? कार्रवाई को सार्वजनिक क्यों नहीं करती है विभाग? क्या इसका कारण कोई राजनीतिक दबाव है या विभाग का माफियाओं के साथ कोई सांठगांठ!

सारंगढ़ बिलाईगढ/मूक पत्रिका

सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले में खनिज क्षेत्र के नाम से सर्वप्रथम मशहूर होने वाले जगह के नाम नाम के अंतर्गत आने वाला ग्राम पंचायत कटंगपाली बहुत पुराना और फेमस जगह रहा है जो की जिले के बरमकेला क्षेत्र अंतर्गत आता है इस क्षेत्र में मीनिंग का कार्य पिछले कई दशकों से किया जा रहा है और अब भी लगातार जारी है। बता दें कि अवैध खनन के नाम से या जगह जाना जाता है इस क्षेत्र के कई सारे ऐसे ठिकाने मौजूद हैं जहां की खनन संबंधी लीज पिछले काफी समय से समाप्त हो चुकी है यह आंकड़े कागजों के आधार पर बताई जा रहे हैं जिस पर किसी का ध्यान आकर्षण नहीं हो रहा है तथा होने वाले अवैध खनन पर जिला सहायक खनिज अधिकारी बजरंग पैंकरा को भी अवगत कराए जाने पर कार्यवाही किए जाने का हवाला देते हुए विभागीय कार्यों को हमले न होने का बहाना बनाकर सीमटा दिया जाता है। किंतु अस्थाई रूप से खनिज जांच निरीक्षक के रूप में कार्यरत दीपक पटेल के द्वारा भी इस क्षेत्र में कोई भी कार्यवाही देखने को नहीं मिली है जबकि विभाग को मौजूदा स्थिति का पूरा-पूरा भान है की बड़े स्तर पर यहां अवैध खनन किया जा रहे हैं फिर भी माफियाओं को संरक्षण दिया जा रहा है इस संबंध में ना जिला अधिकारी द्वारा कोई सुध ली जाती है ना ही विभाग के द्वारा विभागीय गतिविधियों को देखें तो या तो कार्यवाही नाम मात्र के लिए कर दी जाती है जिसकी कार्यवाही की स्थिती सार्वजनिक भी नहीं की जाती उक्त मामले में भ्रष्टाचार का बहुत बड़ा खेल उजागर होता है लेकिन किसी को छत्तीसगढ़ शासन की राजस्व कर चोरी और खनिज पदार्थो का दोहन अवैध तरीके से जमीन खुदाई कर निकलकर लगातार किया जा रहा है। ग्राम पंचायत कटंगपाली में अवैध खनन पर विभागीय कार्रवाई जो की गोपनीय, करण; माफियाओं का धनबल या राजनीति या कोई भ्रष्टाचार? विशेष संपर्क सूत्रों द्वारा यह बात सामने आई है की बीते दिनों 26 तारीख को भी एक बड़े स्तर की कार्यवाही की गई, यह कार्यवाही भी अवैध खनन के संबंध में है। बता दें कि जिस तरह बीते 16 तारीख को एसडीएम वर्षा बंसल के द्वारा ग्राम पंचायत टिमरलगा में कार्यवाही की गई और मामले को गुपचुप तरीके से माफियाओं के मिली भगत से निपटा दिया गया और संबंधित जप्त वाहनों को छोड़कर माफियाओं के सपोर्ट कर वापस अवैध खनन पुनः आरंभ कर दिया गया और मामले को दबा दिया गया ठीक उसी तरह खनिज जांच करने वाले अस्थाई अधिकारी के द्वारा कटंगपाली में भी ऐसा ही कार्य पुणे दोहराते हुए खनिज विभाग की कार्यप्रणाली नजर आ रहा है। उक्त जगह पर यह कार्यवाही की गई है जिसकी सूचना लोकल समाचार पत्रों और ऑनलाइन पोर्टल ओं के माध्यम से कुछ अंक अपडेट की गई है किंतु इस मामले पर आधिकारिक रूप से ना तो कोई बयान जारी किया गया है और ना ही इस संदर्भ में सार्वजनिक तौर पर अब तक कोई भी जानकारी साझा की गई है। इस प्रकार खनिज विभाग और संबंधित निरीक्षण करने वाले अधिकारियों के द्वारा इस बार की कार्यवाही भी गोपनीय कर दी गई है जिससे यह बात पूर्ण रूप से साबित हो चुकी है कि भ्रष्टाचार सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले में बहुत ही बड़े पैमाने पर हो रही है। ग्राम पंचायत के जनप्रतिनिधियों के शिकायत पर की गई बड़ी कार्यवाही जो अब तक सार्वजनिक नहीं की गई?!! सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत कटंगपाली में बीते दिनों 26 मार्च को एक ऐसे खदान पर कार्यवाही की गई है जहां पर अवैध तरीके से खनन हो रहा था जिसकी सूचना ग्रामीणों को थी कि इसकी विभागीय तौर पर खुदाई की लीज 2024 थी जिसकी अब तक लगातार खुदाई जारी थी। ग्राम पंचायत के सरपंच प्रतिनिधि के द्वारा खनिज विभाग को यह सूचना दी गई की ग्राम पंचायत कटंगपाली में अवैध तरीके से खदानों में खनन किया जा रहा है जिस पर विभाग में अस्थाई तौर पर तथा अवैधानिक तरीके से काफी लंबे समय तक पदभार को संभाले हुए खनिज जांच निरीक्षक दीपक पटेल के द्वारा ग्राम पंचायत कटंगपाली में पहुंचकर अवैध रूप से हो रहे खनन पर तहरीर देते हुए कार्यवाही के लिए मोर्चा संभाला गया। उक्त कार्यवाही के लिए खनिज जांच निरीक्षक महोदय के द्वारा कार्यवाही कर विभाग की कार्यप्रणाली को पुनः अस्तित्व प्रदान किया गया। जहां कार्यवाही को लेकर अब तक ना ही कोई कार्यवाही की स्थिति सार्वजनिक की गई है और ना ही इस संबंध में किसी भी प्रकार का कोई रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है।

खनिज निरीक्षक के द्वारा की गई कार्यवाही-ग्राम पंचायत के कुछ लोगों के द्वारा यह बताया गया की उक्त 26 मार्च को सारंगढ़ खनिज विभाग की आलाअधिकारियों द्वारा कटंगपाली के डोलोमाईट खदान में की गई कार्यवाही में विभाग की टीम ने 4 पोकलेन और 2 हाईवा का पंचनामा तैयार किया गया है ऐसी बात सामने आई है जिसकी आधिकारिक तौर पर पुष्टि नहीं की जा सकी है लेकिन अगर कार्यवाही हुई है तो जप्त की गई मशीनों और गाड़ियों को खनिज विभाग ने जरूर अपनी सुपुर्द की में लिया होगा अब इस संबंध में जानकारी साझा करने के बाद ही कुछ कहा जा सकता है। जिला सहायक खनिज अधिकारी बजरंग पर के द्वाराड्ड हर बार कार्यवाही का रिपोर्ट न आने की बात कही जाती है। भला ऐसा कैसे हो सकता है कि संबंधित जिला सहायक खनिज अधिकारी को इस बात की रिपोर्ट अब तक ना मिली हो और उसी के टीम ने यह कार्यवाही की हो या कार्यवाही अब तक सार्वजनिक न करने की क्या वजह हो सकती है क्या इस मामले में भी कोई भ्रष्टाचार हो रहा है? यह तो जांच के बाद ही सामने आएगा किंतु फिर यह प्रश्न उठता है की जांच आखिर करेगा कौन? क्योंकि जांच करने वाले कुछ अनुविभागीय अधिकारी भी अपने कार्यों को लेकर किसी तरीके की कोई भी रिपोर्ट अथवा कार्यवाही सार्वजनिक ही नहीं करते।

पुसौर ब्लॉक के ठेंगापाली में जल जीवन मिशन की टंकी तीन साल से बनी शोपीस

रायगढ़ /मूक पत्रिका

ग्रामीण अंचलों में घर घर तक सुचारू रूप से पेयजल मुहैया कराने को लेकर शासन द्वारा जल जीवन मिशन का क्रियान्वयन किया जा रहा है।परन्तु उचित दिशा निर्देशन के अभाव ठेकेदारों की मनमानी और जिम्मेदार अधिकारियों की बेरुखी से कई ग्रामों में योजना पूरी होने के सालों बाद भी पानी नहीं पहुंच सका है।जिनमें से पुसौर अंचल अंतर्गत ग्राम पंचायत रेंगालपाली का आश्रित ग्राम ठेंगापाली है।जहां टंकी निर्माण एवं पाईप लाइन विस्तार के कार्य को लगभग तीन वर्षो का समय तो बीत चुका।परन्तु यहां के ग्रामीणों के घर में पानी की एक बूंद नहीं पहुंच सकी।मजबूरन अन्य साधनों से पेयजल की आपूर्ति के लिए इन्हें जूझना पड़ रहा है। गौरतलब हो कि रायगढ़ जिले के पुसौर विकासखंड के ग्राम पंचायत रेंगालपाली के आश्रित ग्राम ठेंगापाली में जल जीवन मिशन के तहत वर्ष 2022-23 में गांव में पानी की टंकी और पाइपलाइन का निर्माण कराया गया था। योजना का उद्देश्य गांव के हर घर तक नल से स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना था, लेकिन योजना यहां अधूरी और बेअसर साबित हो रही है। लाखों रुपए खर्च कर पानी की टंकी तो बना दी गई, लेकिन आज तक ग्रामीणों के घरों तक पानी नहीं पहुंच पाया है। नल लगे हैं, पाइपलाइन भी बिछी है, पर पानी की एक बूंद के लिए लोग तरस रहे हैं। ग्रामीणों का कहना है कि टंकी बने काफी समय हो चुका है, लेकिन आज तक घरों में पानी की सप्लाई शुरू नहीं हो सकी। नलों में पानी नहीं आने के कारण ग्रामीणों को आज भी दूसरे मध्यमों पर निर्भर रहना पड़ रहा है। गर्मी के मौसम में स्थिति और भी गंभीर हो जाती है।बताया जा रहा है कि निर्माण कार्य पूरा हुए तीन साल हो चूका है इसके बाद भी योजना का संचालन शुरू नहीं किया गया। वहां खोदा गया बोर भी अब नीचे धस गया है कई बार पंचायत और संबंधित अधिकारियों को इसकी शिकायत की गई, लेकिन अब तक कोई ठोस समाधान नहीं निकल पाया है।

सरपंच के शिकायती पत्र पर नहीं दिया ध्यान-गांव के लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि जल्द से जल्द पानी की सप्लाई शुरू कराई जाए ताकि उन्हें स्वच्छ पेयजल मिल सके और योजना का वास्तविक लाभ गांव तक पहुंच सके। इस इस संबंध में पंचायत के सरपंच सुमति चौहान के द्वारा संबंधित विभाग को पत्र लिख संस्था से अवगत कराया गया। बावजूद इसके विभाग की ओर से कोई सहायता नहीं मिल पा रही है ऐसे में उनकी समस्याएं पिछले तीन सालों से जस की तस बनी हुई है।अब विभागीय अधिकारियों का यही रवैया जहां लोगों की पेयजल समस्या में बढ़ोतरी कर रहा है।बल्कि ग्राम पंचायतों से आ रही शिकायतों की अनदेखी कर शासन की महत्वाकांक्षी योजना पर भी बट्टा लगाए जाने का कार्य किया जा रहा है।

पी एच ई विभाग उदासीन-रायगढ़ जिले के कई गावों में ऐसे मामले सामने आए हैं जहां जल जीवन मिशन के तहत पाइपलाइन और नल तो लगा दिए गए, लेकिन पानी की आपूर्ति नहीं हो पाई। कई जगह तकनीकी खामियों या अधूरे कार्य के कारण गांवों में नलों से पानी नहीं पहुंच रहा है। बड़े आश्चर्य की बात है कि पी एच ई के प्रमुख अधिकारी को ही अपने जिले में सूखे हैंड पंप और बोर के स्थिति की जानकारी ही नहीं है।या दूसरे शब्दों में कहे कि जिले में खराब हालत होने की वजह से जानकारी उपलब्ध नहीं कराई जाती। ऐसी स्थिति में जलजीवन मिशन के सही क्रियान्वयन की उम्मीद करना भी बेमानी होगी।फिलहाल सवाल यह है कि जब सरकार करोड़ों रुपए खर्च कर गांवों में पानी की टंकियां और पाइपलाइन बनवा रही है, तो आखिर इन योजनाओं का लाभ ग्रामीणों तक क्यों नहीं पहुंच पा रहा। ठेंगापाली गांव में बनी यह पानी की टंकी अब ग्रामीणों के लिए सिर्फ एक शोपीस बनकर रह गई है।

लिखते रहोज सीखते रहो, लिखते रहो जीवन में, नित रोज कुछ सीखते रहो

लिखते रहोज सीखते रहो, लिखते
रहो जीवन में, नित रोज कुछ
सीखते रहो,
कलम को अपनी आवाज़ बनाकर,
सच की राह पर चलते रहो।
लिखना है तो लिखो, समाज में हो
रहे अत्याचार पर,
लिखकर देखो, अपने आसपास के
बदलते व्यवहार पर।
अगर लिख सको तो लिखो, उस
कमल रूपी तलवार पर,
जो दिखती तो कोमल है, पर छुपा
है वार उसके प्रहार पर
लिखकर देखो, समाज में फैलते
भ्रष्टाचार पर,
और उन हाथों पर भी, जो बेचते हैं
न्याय बाजार पर।
अगर लिख सको तो लिखो, पेड़ों
की होती कटाई पर,
और उस खामोशी पर, जो छाई है
हरियाली की विदाई पर।
अगर लिख सको तो लिखो, मासूमों
की बेबस पिटाई पर,
और उन आंखों पर भी, जो रोती हैं
हर सच्चाई पर।
जो लिख सको तो लिखो
अन्नदाताओं के दुख पर,
उनकी सूनी आँखों में छुपे हर अधूरे
सुख पर।
जो लिख सको तो लिखो नन्हे
बच्चों की पढ़ाई पर,
उनके सपनों और शिक्षा की गहराई
पर।
लिखो उन लोगों पर, जो नदियों का
सीना छलनी करते हैं,
अपनी लालच की आग में, प्रकृति
को रोज़ जलाते रहते हैं।
लिखो भू-माफियों की उस काली
कमाई पर,
जो सपनों के घरों को लूटती है
खुली बर्बराई पर।
लिखो उस परीक्षा की धांधली पर,
जहाँ मेहनत हार जाती है,
और नकल की सीढ़ी चढ़कर झूठी
जीत मुस्काती है।
लिखो उन कागज़ी कामों पर, जो
फाइलों में ही दम तोड़ देते हैं,
जहाँ वादे तो बड़े होते हैं, पर
हकीकत में सब छोड़ देते हैं।
मेरा काम है लिखना—मैं लिखता
रहूँगा,
हर दिन कुछ नया सीखकर, आगे
बढ़ता रहूँगा।
जो रुक गई कलम, तो रुक जाएगी
सोच,
और रुक गयी जो सोच, तो खत्म
हो जाएगी खोज।
जो लिखना बंद हुआ, तो सीखना
भी रुक जाएगा,
और ठहर गया जो इंसान, वो जीवन
में कहाँ जा पाएगा।

इसलिए कहता हूँ—
हर रोज लिखते रहो,
और हर रोज कुछ नया सीखते रहो

केशव डनसेना
बरमकेला

गेहूं के खेतों में लगी आग : देखते ही देखते जल गई 15 एकड़ फसल, किसानों की महीनों की मेहनत मिनटों में खाक

सारंगढ़ बिलाईगढ़ /मूक पत्रिका

छत्तीसगढ़ के सारंगढ़ जिले के सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत मौहाढोडा में हड़कंप मच गया। जब गेहूं की खड़ी फसल में अचानक भीषण आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया और करीब 10 से 15 एकड़ में फैली गेहूं की फसल जलकर पूरी तरह खाक हो गई।घटना के बाद गांव में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। आग की लपटें इतनी तेज थीं कि, किसानों के पास बचाव का कोई मौका नहीं रहा और उनकी महीनों की मेहनत पल भर में राख में तब्दील हो गई। इस घटना से प्रभावित किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा है।आग बुझाने का प्रयास जारी सूचना मिलते ही दमकल विभाग की टीम मौके पर पहुंची और आग बुझाने का प्रयास लगातार जारी है। काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाने की कोशिश की जा रही है, हालांकि तब तक बड़ा नुकसान हो चुका था। फिलहाल, आग लगने के कारणों का पता नहीं चल सका है। प्रशासन द्वारा मामले की जांच की जा रही है।

राजस्व प्रकरणों के निराकरण हेतु कलेक्टर डॉ कन्नौजे ने प्रत्येक ग्राम पंचायतों में राजस्व शिविर लगाने के दिए निर्देश

गर्मी के दिनों में पेयजल संकट ना हो इसके लिए सीईओ जनपद और पीएचई अधिकारी को निर्देश

अवैध खनिज और रेत परिवहन, भंडारण पर कठोर कार्यवाही करने सयुंक्त टीम को निर्देश

1 से 15 अप्रैल, 4 से 18 मई और 1 से 15 जून तक होगी राजस्व शिविर

सारंगढ़ बिलाईगढ़ /मूक पत्रिका

कलेक्टर डॉ संजय कन्नौजे ने समय सीमा की बैठक में सभी एसडीएम, तहसीलदार और राजस्व अधिकारी कर्मचारी को निर्देश दिए कि, माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के निर्देशानुसार अप्रैल, मई और जून माह में राजस्व प्रकरणों के निराकरण हेतु सभी ग्राम पंचायतों में राजस्व शिविर का आयोजन करें। इस शिविर में छोटे छोटे राजस्व प्रकरण, सीमांकन, अविवादित नामांतरण, बंटवारा, त्रुटि सुधार, जाति, आय, निवास प्रमाण पत्र, ऋण पुस्तिका आदि के लिए आम जनों को भटकना न पड़े। साथ ही इस राजस्व शिविर का पर्याप्त प्रचार प्रसार कोतवारों के माध्यम से मुनादी करके करने के निर्देश दिए ताकि जिस दिन शिविर हो, वहां स्थानीय लोग इसका लाभ लेते हुए अपने राजस्व मामलों का अधिक से अधिक मात्रा में निराकरण करा सकें। डॉ कन्नौजे ने जिले में अवैध खनिज और रेत परिवहन और भंडारण पर सयुंक्त टीम को कार्यवाही करने के निर्देश दिए। जिला दण्डाधिकारी ने गढ़ चौक के पास अवैध निर्माण करने वाले के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए एसडीएम को निर्देश दिए। वहीं आगामी माह में 3 माह का राशन आने वाला है, उसके लिए खाद्य अधिकारी को पीडीएस राशन दुकान में पर्याप्त तैयारी करने के निर्देश दिए। बैठक में आयुष्मान, शहीद वीर नारायण आयुष्मान स्वास्थ्य योजना, निर्माणाधीन जिला अस्पताल, नवीन कलेक्टर कार्यालय,एसडीएम कार्यालय सारंगढ़ और बिलाईगढ़, सामुदायिक हॉस्पिटल बिलाईगढ़, पीएम आवास, सोख्ता गड्ढा, बच्चों के पोषण आहार के लिए आधार कार्ड, स्वनिधि योजना, पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति, मल्टीविलेज पेयजल प्रगति, जनगणना, सरिया बस स्टैंड निर्माण, जाति, निवास, आय प्रमाण पत्र, खाद बीज भंडारण आदि पर कलेक्टर ने अधिकारियो के साथ चर्चा कर समीक्षा किया।

देहरादून में पत्रकार सुरक्षा कानून की मांग तेज, अखिल भारतीय पत्रकार सुरक्षा समिति ने की प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा

देहरादून /मूक पत्रिका

अखिल भारतीय पत्रकार सुरक्षा समिति, उत्तराखंड द्वारा बीते रविवार को देहरादून प्रेस क्लब में एक महत्वपूर्ण प्रेस वार्ता आयोजित की गई। इस दौरान देशभर में पत्रकारों पर बढ़ते हमलों, धमकियों और उत्पीड़न के मामलों पर गहरी चिंता व्यक्त की गई। समिति ने कहा कि वर्तमान समय में पत्रकारिता का कार्य अत्यंत चुनौतीपूर्ण और जोखिमपूर्ण हो गया है। सच को सामने लाने वाले पत्रकार लगातार दबाव, धमकी और हमलों का सामना कर रहे हैं, जो लोकतंत्र के लिए गंभीर संकेत है। समिति के पदाधिकारियों ने स्पष्ट किया कि यह केवल पत्रकारों का मुद्दा नहीं, बल्कि उनके परिवारों और लोकतंत्र की सुरक्षा से जुड़ा विषय है। प्रेस वार्ता में बताया गया कि उत्तराखंड में पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक प्रभावी और व्यवहारिक पत्रकार सुरक्षा कानून लाने की दिशा में काम शुरू कर दिया गया है। राज्य की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कानून का एक प्रारूप (ड्राफ्ट) तैयार किया जा रहा है, जिसे जल्द ही सार्वजनिक किया जाएगा। इस अवसर पर समिति ने उत्तराखंड प्रदेश की प्रथम कार्यकारिणी की घोषणा भी की। नवगठित कार्यकारिणी में राज आलानी को प्रदेश उपाध्यक्ष, राजकमल को प्रदेश महासचिव (संगठन), उमेद सिंह बिष्ट को प्रदेश महासचिव, कुलदीप कुमार, नवीन चंद्रा, सुनील राज एवं श्रीमती पारुल कटियार को प्रदेश सचिव बनाया गया है। वहीं राज्य सदस्यों में शबनम खान, अब्दुल रजीक और श्रीमती कमल शर्मा को शामिल किया गया है। नव नियुक्त प्रदेश अध्यक्ष अनुपम खत्री ने मीडिया से बातचीत में कहा कि पत्रकारों की सुरक्षा आज केवल एक मांग नहीं, बल्कि समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन चुकी है। उन्होंने कहा कि पत्रकार लोकतंत्र की रीढ़ हैं और यदि वे सुरक्षित नहीं होंगे, तो समाज में सत्य और पारदर्शिता भी सुरक्षित नहीं रह पाएगी। उन्होंने कहा कि समिति पत्रकारों के हितों की रक्षा और सुरक्षा कानून लागू कराने के लिए सभी स्तरों पर निरंतर प्रयास करेगी। साथ ही सभी पत्रकार संगठनों, सामाजिक संस्थाओं और जनप्रतिनिधियों से इस पहल में सहयोग करने का आह्वान किया गया।

मिनी स्टेडियम के बॉक्स क्रिकेट में आधी लाइटें बंद, खिलाड़ियों को अभ्यास में परेशानी, गर्मी में देर शाम होता है अभ्यास, शिकायत के बाद भी जिम्मेदार नहीं दे रहे ध्यान

रायगढ़/मूक पत्रिका

जिले में खेल प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा स्थानीय मिनी स्टेडियम में बॉक्स क्रिकेट मैदान का निर्माण तो कराया गया, लेकिन इसके रखरखाव को लेकर जिम्मेदारों की उदासीनता अब खिलाड़ियों पर भारी पड़ने लगी है। बॉक्स क्रिकेट मैदान में एक साइड की लाइटें लंबे समय से खराब पड़ी हुई हैं, जिससे शाम के समय अभ्यास करने वाले खिलाड़ियों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। जानकारी के अनुसार मिनी स्टेडियम स्थित इस बॉक्स क्रिकेट का निर्माण जिला खनिज न्यास मद से लगभग 19 लाख 13 हजार रुपये की लागत से कराया गया था। निर्माण के बाद खिलाड़ियों में इसे लेकर काफी उत्साह भी देखा गया था और यहां नियमित रूप से युवा क्रिकेट प्रेमी अभ्यास के लिए पहुंचने लगे थे।हालांकि समय बीतने के साथ मैदान के रखरखाव को लेकर लापरवाही सामने आने लगी है। वर्तमान में बॉक्स क्रिकेट के एक हिस्से की लाइटें पिछले करीब तीन महीनों से खराब पड़ी हुई हैं। ऐसे में मैदान का केवल आधा हिस्सा ही रोशन हो पाता है, जबकि बाकी हिस्से में अंधेरा बना रहता है। इससे खिलाड़ियों को अभ्यास के दौरान गेंद देखने में परेशानी होती है।बताया जा रहा है कि मैदान के केयरटेकर द्वारा नगर निगम के कार्यपालन अभियंता को इसकी शिकायत भी की गई थी और लाइटों की मरम्मत कराने का अनुरोध किया गया था। इसके बावजूद अब तक समस्या का समाधान नहीं हो सका है। खिलाड़ियों का कहना है कि बार-बार सूचना देने के बाद भी जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा इस ओर कोई ठोस पहल नहीं की जा रही है, जिससे उनकी परेशानी लगातार बनी हुई है।

गर्मी में देर शाम होता है अभ्यास

इन दिनों गर्मी बढ़ने के कारण अधिकांश खिलाड़ी देर शाम या रात के समय ही अभ्यास के लिए मैदान पहुंचते हैं। ऐसे में पर्याप्त रोशनी का होना बेहद जरूरी है। लेकिन आधी लाइटें बंद होने के कारण खिलाड़ियों को सीमित रोशनी में ही अभ्यास करना पड़ रहा है, जिससे खेल प्रदर्शन पर भी असर पड़ रहा है।बहरहाल देखना लाजमी होगा कि खिलाड़ियों को अधूरी लाईट की वजह से लंबेवसामी से हो रही समस्या को लेकर निगम की ठोस पहल करता है या फिर निगम की उदासीनता से खिलाड़ियों की समस्या लंबे समय तक बरकरार रहेगी।

अभियान के दौरान परिषद के पदाधिकारियों ने घर-घर जाकर और सार्वजनिक चौपालों के माध्यम से ग्रामीणों से संवाद किया।

सारंगढ़: छिंद में सतनामी विकास परिषद का 'नशा मुक्ति' एवं 'गांव-गांव चलो' अभियान संपन्न,,,

सारंगढ़ बिलाईगढ़ /मूक पत्रिका

सामाजिक चेतना और ग्रामीण उत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, सतनामी विकास परिषद सारंगढ़ द्वारा ग्राम पंचायत छिंद में 'नशा मुक्ति' एवं 'गांव-गांव चलो' अभियान का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने और सामाजिक एकजुटता का संदेश देने का प्रयास किया गया।

जागरूकता अभियान की मुख्य बातेंः-

अभियान के दौरान परिषद के पदाधिकारियों ने घर-घर जाकर और सार्वजनिक चौपालों के माध्यम से ग्रामीणों से संवाद किया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से निम्नलिखित बिंदुओं पर जोर दिया गयाः

* नशा मुक्ति का संकल्पः शराब और अन्य नशीले पदार्थों से परिवार और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले आर्थिक एवं शारीरिक दुष्प्रभावों के बारे में बताया गया।

* सामाजिक समरसताः 'गांव-गांव चलो' अभियान के तहत सतनाम पंथ के सिद्धांतों और बाबा गुरु घासीदास जी के बताए मार्ग 'मनखे-मनखे एक समान' के संदेश को जन-जन तक पहुँचाया गया।

* शिक्षा एवं विकासः ग्रामीणों को अपने बच्चों की शिक्षा और स्वरोजगार के अवसरों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया।

महिला शक्ति और अधिकारियों की उपस्थिति

इस अभियान की सफलता में ग्राम पंचायत छिंद की महिला समिति की भूमिका अत्यंत सराहनीय रही। महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए गांव को नशा मुक्त बनाने की शपथ ली।

कार्यक्रम में सतनामी विकास परिषद के वरिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। परिषद के पदाधिकारियों ने अपने संबोधन में कहा कि समाज के विकास के लिए गांव का सशक्त होना अनिवार्य है और नशा मुक्त समाज ही उन्नति की पहली सीढ़ी है।

÷जब तक समाज नशे की गिरफ्त में रहेगा, तब तक वास्तविक आर्थिक और मानसिक आजादी संभव नहीं है। छिंद की महिलाओं का उत्साह यह दर्शाता है कि अब परिवर्तन की लहर शुरू हो चुकी है।÷

– परिषद प्रवक्ता

ग्रामीणों का मिला भरपूर सहयोग

छिंद के ग्रामीणों ने परिषद के इस पहल का स्वागत किया और विश्वास दिलाया कि वे अपने गांव को आदर्श ग्राम बनाने की दिशा में परिषद के साथ मिलकर काम करेंगे। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी लोगों ने नशा न करने और दूसरों को भी इसके प्रति सचेत करने की सामूहिक शपथ ली।सारंगढ़ः छिंद में सतनामी विकास परिषद का 'नशा मुक्ति' एवं 'गांव-गांव चलो' अभियान संपन्न,,,

सारंगढ़-बिलाईगढ़ :- सामाजिक चेतना और ग्रामीण उत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, सतनामी विकास परिषद सारंगढ़ द्वारा ग्राम पंचायत छिंद में 'नशा मुक्ति' एवं 'गांव-गांव चलो' अभियान का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने और सामाजिक एकजुटता का संदेश देने का प्रयास किया गया।

जागरूकता अभियान की मुख्य बातेंः-

अभियान के दौरान परिषद के पदाधिकारियों ने घर-घर जाकर और सार्वजनिक चौपालों के माध्यम से ग्रामीणों से संवाद किया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से निम्नलिखित बिंदुओं पर जोर दिया गयाः

* नशा मुक्ति का संकल्पः शराब और अन्य नशीले पदार्थों से परिवार और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले आर्थिक एवं शारीरिक दुष्प्रभावों के बारे में बताया गया।

* सामाजिक समरसताः 'गांव-गांव चलो' अभियान के तहत सतनाम पंथ के सिद्धांतों और बाबा गुरु घासीदास जी के बताए मार्ग 'मनखे-मनखे एक समान' के संदेश को जन-जन तक पहुँचाया गया।

* शिक्षा एवं विकासः ग्रामीणों को अपने बच्चों की शिक्षा और स्वरोजगार के अवसरों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया।

महिला शक्ति और अधिकारियों की उपस्थिति

इस अभियान की सफलता में ग्राम पंचायत छिंद की महिला समिति की भूमिका अत्यंत सराहनीय रही। महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए गांव को नशा मुक्त बनाने की शपथ ली।

कार्यक्रम में सतनामी विकास परिषद के वरिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। परिषद के पदाधिकारियों ने अपने संबोधन में कहा कि समाज के विकास के लिए गांव का सशक्त होना अनिवार्य है और नशा मुक्त समाज ही उन्नति की पहली सीढ़ी है।

÷जब तक समाज नशे की गिरफ्त में रहेगा, तब तक वास्तविक आर्थिक और मानसिक आजादी संभव नहीं है। छिंद की महिलाओं का उत्साह यह दर्शाता है कि अब परिवर्तन की लहर शुरू हो चुकी है।÷

– परिषद प्रवक्ता

ग्रामीणों का मिला भरपूर सहयोग

छिंद के ग्रामीणों ने परिषद के इस पहल का स्वागत किया और विश्वास दिलाया कि वे अपने गांव को आदर्श ग्राम बनाने की दिशा में परिषद के साथ मिलकर काम करेंगे। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी लोगों ने नशा न करने और दूसरों को भी इसके प्रति सचेत करने की सामूहिक शपथ ली।

संपादकीय

होर्मुज पर ईरान के फैसले से भारत समेत दुनिया को बड़ी राहत

मौजूदा संकट के बीच सरकार ने तेल और गैस का पर्याप्त भंडार होने की बात कही है, लेकिन सच यह है कि आम लोग रसोई गैस, तेल और उर्वरकों की कमी से उपजी मुश्किल का सामना कर रहे हैं।पश्चिम एशिया में अमेरिका और इजरायल के हमले के बाद ईरान ने जवाब के तौर पर जो मोर्चे खोले, उसमें होर्मुज जलमार्ग को बाधित करना उसकी एक कारगर रणनीति साबित हुई है। इसी वजह से आज हालत यह है कि दुनिया के कई देश ईरान के सख्त रुख की वजह से कच्चे तेल और गैस के संकट का सामना कर रहे हैं।इनमें वैसे देश भी हैं, जिन्होंने ईरान पर अमेरिका और इजरायल के हमले में कोई प्रत्यक्ष भागीदारी नहीं की है, वे किसी भी पक्ष में मैदान में नहीं हैं और मतभेद के मुद्दों का हल संवाद के जरिए करने के समर्थक हैं। भारत ने भी पश्चिम एशिया में उभरे संकट का समाधान बातचीत से निकालने के लिए आवाज उठाई है।शायद यही वजह है कि अब ईरान ने होर्मुज जलमार्ग से चीन और रूस सहित जिन पांच देशों को अपने जहाज निकालने की छूट दी है, उनमें भारत भी शामिल है। यों भारत आने वाले चार जहाज पहले ही होर्मुज जलमार्ग को पार कर चुके हैं, लेकिन अठारह जहाज उसी इलाके में फंसे हुए थे।ईरान के ताजा रुख के बाद उम्मीद जताई जा रही है कि भारत के बाकी जहाज वहां से निकल कर आ सकेंगे और इससे देश में तेल और गैस के गहराते संकट को कम करने में मदद मिलेगी।हालांकि अमेरिका और इजरायल को लेकर ईरान अब भी सख्त है और शांति प्रस्तावों को लेकर भी उसने कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं दी है। मगर होर्मुज जलमार्ग पर उसके रुख में आई नरमी से दुनिया के कुछ देशों को राहत मिल सकती है।बाकी ईरान जिन्हें शत्रु देश मानता है, उनके जलपोतों को लेकर वह अब भी सख्त है। जहां तक भारत का सवाल है, तो ईरान के विदेश मंत्री ने कहा कि हमने कुछ ऐसे देशों को होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने की इजाजत दी है, जिन्हें हम मित्र मानते हैं।इसमें चीन, रूस, भारत, इराक तथा पाकिस्तान शामिल हैं। दरअसल, पिछले कुछ दिनों से भारत ईरान के साथ लगातार कूटनीतिक संवाद के जरिए पश्चिम एशिया में संघर्ष खत्म कराने के साथ-साथ होर्मुज जलमार्ग से अपने लिए भी एक रास्ता निकालने की कोशिश कर रहा था।कुछ उतार-चढ़ाव को छोड़ दें, तो भारत और ईरान के संबंध दोस्ताना रहे हैं।

पूरी दुनिया में प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन चुकी है। ऐसे में एक ओर वैश्विक स्तर पर पर्यावरण को बचाने का आह्वान किया जा रहा है, तो दूसरी तरफ विभिन्न देश धरती के वातावरण को बारूद से भर देने वाले युद्धों में उलझे हुए हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध इसका बड़ा उदाहरण है। लंबे समय से चल रहा यह संघर्ष केवल सैनिकों और शहरों के लिए त्रासदी नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण के लिए भी एक गहरी चोट है। जब मिसाइलें तेल भंडारों, ऊर्जा संयंत्रों और रासायनिक कारखानों पर गिरती हैं, तो केवल इमारतें नहीं टूटतीं, हवा में विषैला धुआं फैलता है, नदियों में जहरीले पदार्थ घुलते हैं और मिट्टी की संरचना तक बदल जाती है। विडंबना यह है कि इस युद्ध में दुनिया की बड़ी ताकतें भी किसी न किसी रूप में इसके पीछे खड़ी दिखाई देती हैं। सैन्य सहायता, हथियारों की आपूर्ति और रणनीतिक समर्थन ने इस संघर्ष को लंबा और जटिल बना दिया है। यही वे देश हैं, जो अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पर्यावरण संरक्षण के सबसे मुखर प्रवक्ता भी हैं।

दुनिया भर के सम्मेलनों में पर्यावरण बचाने की बातें, युद्ध आते ही खामोश हो जाता है विमर्श

(प्रीति अज्ञात)

युद्ध के धुएं में गुम पर्यावरण के प्रश्न प्रीति अज्ञात आज के दौर में पर्यावरण की चर्चा इतनी व्यापक हो गई है कि इससे जुड़े शब्दों का एक अंतहीन जंगल बन गया है, जिसमें हर रास्ता पृथ्वी की चिंता तक ले जाता है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जलवायु परिवर्तन, कार्बन उत्सर्जन, जैव विविधता और सतत विकास जैसे शब्द बार-बार गूंजते हैं। सम्मेलनों में पृथ्वी को बचाने के संकल्प लिए जाते हैं, भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित ग्रह की कल्पना की जाती है और यह घोषणा की जाती है कि पर्यावरण संकट मानव सभ्यता के सामने सबसे बड़ा खतरा है। मगर जैसे ही कहीं युद्ध का नगाड़ा बजता है, यह पूरा विमर्श मानो अचानक मौन हो जाता है। धरती और इसके वातावरण की रक्षा की वह नैतिकता, जो शांति के दिनों में इतनी मुखर दिखाई देती है, युद्ध की आहट पाते ही धुएं में विलीन हो जाती है। तब पर्यावरण की चिंता पीछे छूट जाती है और सामने आ खड़ी होती है शक्ति, प्रभुत्व और भू-राजनीति की कठोर भाषा। यह आधुनिक सभ्यता की सबसे गहरी विडंबनाओं में से एक है।

पूरी दुनिया में प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन चुकी है। ऐसे में एक ओर वैश्विक स्तर पर पर्यावरण को बचाने का आह्वान किया जा रहा है, तो दूसरी तरफ विभिन्न देश धरती के वातावरण को बारूद से भर देने वाले युद्धों में उलझे हुए हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध इसका बड़ा उदाहरण है। लंबे समय से चल रहा यह संघर्ष केवल सैनिकों और शहरों के लिए त्रासदी नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण के लिए भी एक गहरी चोट है। जब मिसाइलें तेल भंडारों, ऊर्जा संयंत्रों और रासायनिक कारखानों पर गिरती हैं, तो केवल इमारतें नहीं टूटतीं, हवा में विषैला धुआं फैलता है, नदियों में जहरीले पदार्थ घुलते हैं और मिट्टी की संरचना तक बदल जाती है। विडंबना यह है कि इस युद्ध में दुनिया की बड़ी ताकतें भी किसी न किसी रूप में इसके पीछे खड़ी दिखाई देती हैं। सैन्य सहायता, हथियारों की आपूर्ति और रणनीतिक समर्थन ने इस संघर्ष को लंबा और जटिल बना दिया है। यही वे देश हैं, जो अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पर्यावरण संरक्षण के सबसे मुखर प्रवक्ता भी हैं।

इसी तरह अब इजरायल-अमेरिका तथा ईरान ने भी युद्ध का मोर्चा खोल दिया है। इसने मध्य-पूर्व की धरती को एक बार फिर बारूद के ढेर पर खड़ा कर दिया है। इस संघर्ष में गाजा पट्टी से लेकर ईरान, इजरायल और खाड़ी क्षेत्र के अन्य देशों में हो रही बमबारी केवल मानवीय त्रासदी नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण के विनाश का कारण की भी बन रही है। गाजा की सीमित भूमि पर हजारों बमों की बरसात ने वहां मिट्टी को विषैला बना दिया है। बारूदी हमलों से जलस्रोत नष्ट हो रहे हैं, समुद्री तट प्रदूषित हो रहे हैं और हवा में बारूद का जहर घुल रहा है। युद्ध का यह पर्यावरणीय पक्ष अक्सर मानवीय त्रासदी की विशालता के पीछे छिप जाता है, लेकिन उसका प्रभाव कहीं अधिक दीर्घकालिक होता है। इतिहास ऐसी घटनाओं की सच्चाई को उजागर करता है, लेकिन उससे कोई सबक नहीं लिया जाता। वर्ष 1991 के खाड़ी युद्ध के दौरान कुवैत के तेल कुओं में लगी आग ने महीनों तक आसमान को काले धुएं से ढक दिया था, जो केवल युद्ध नहीं, बल्कि पर्यावरण पर भी हमला था। इसी तरह वियतनाम युद्ध में जंगलों को नष्ट करने के लिए 'एजंट आरेंज' जैसे रसायनों का प्रयोग किया गया, जिसने लाखों हेक्टेयर जंगल नष्ट कर दिए और वहां की धरती तथा हवा को जहरीला बना दिया।

युद्ध का हर विस्फोट केवल सैनिकों को नहीं मारता, वह धरती की छाती में भी एक घाव बनाता है। एक बम जब गिरता है, तो उसके साथ हजारों टन कार्बन वातावरण में फैल जाता है। टैंक और लड़ाकू विमान ईंधन की ऐसी खपत करते हैं, जिसकी कल्पना भी सामान्य जीवन में नहीं की जा सकती। यदि युद्ध के दौरान होने वाले कार्बन उत्सर्जन की सही गणना की जाए, तो शायद वह कई छोटे देशों के कुल वार्षिक उत्सर्जन से भी अधिक होगा। फिर भी अंतरराष्ट्रीय जलवायु सम्मेलनों में इस विषय पर बहुत कम चर्चा होती है, क्योंकि युद्ध के समय नैतिक प्रश्नों को अक्सर राष्ट्रवाद की चादर से ढक दिया जाता है। पर्यावरण की बात करने वाले कई वैश्विक मंच भी इस विषय पर मौन साध लेते हैं। युद्ध और पर्यावरण के बीच का संबंध केवल प्रदूषण तक सीमित नहीं है। युद्ध प्राकृतिक संसाधनों के विनाश का भी कारण बनते हैं। जंगलों को काटकर सैन्य अड्डे बनाए जाते हैं और खनिज संपदाओं पर नियंत्रण के लिए संघर्ष छेड़े जाते हैं। इस दृष्टि से देखें, तो युद्ध और पर्यावरण संकट एक-दूसरे से अलग नहीं, बल्कि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

सबसे बड़ा विरोधाभास यह है कि पर्यावरण के नाम पर नैतिकता का पाठ वही देश पढ़ाते हैं, जिनकी सैन्य शक्ति सबसे अधिक है। वे विकासशील देशों को कार्बन उत्सर्जन कम करने की सलाह देते हैं, लेकिन अपने सैन्य उद्योगों के उत्सर्जन पर शायद ही कभी चर्चा करते हैं। यहां सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि क्या पर्यावरण की चिंता केवल एक राजनीतिक औजार है? क्या यह गंभीरता तभी जागृत होती है, जब किसी विकासशील देश के उद्योगों पर सवाल उठाने हों? मगर पृथ्वी की वास्तविकता इससे कहीं अधिक व्यापक है। धरती किसी एक राष्ट्र की नहीं है। हवा, पानी, मिट्टी और जंगल पूरी मानवता की साझा धरोहर हैं।

जब किसी युद्ध में तेल के भंडार जलते हैं, तो उनका धुआं पूरी दुनिया के वातावरण में फैलता है। जब रासायनिक कारखाने नष्ट होते हैं, तो उनके विषैले अवशेष नदियों और समुद्रों तक पहुंच जाते हैं। इसलिए युद्ध को केवल राजनीतिक या सामरिक घटना के रूप में नहीं देखा जा सकता। यह केवल मानवता का ही नहीं, बल्कि पर्यावरणीय संकट का भी एक बड़ा कारण है। आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि आज की दुनिया में युद्ध और पर्यावरण पर विमर्श एक साथ चल रहे हैं, मगर दोनों के बीच कोई वास्तविक संवाद नहीं है। एक तरफ जलवायु सम्मेलन हो रहे हैं, दूसरी तरफ हथियारों की दौड़ तेज होती जा रही है।

संभवत-मानव सभ्यता इतिहास के उस मोड़ पर खड़ी है, जहां उसे यह तय करना होगा कि वह पृथ्वी को बचाना चाहती है या अपने अहंकार को, क्योंकि युद्ध उसी अहंकार की अभिव्यक्ति है, जो यह मानता है कि शक्ति ही सबसे बड़ा सत्य है। आज जलवायु परिवर्तन, असामान्य मौसम और प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती संख्या हमें यही संकेत दे रही है कि पृथ्वी की सहनशीलता की भी एक सीमा है। यदि मानव सभ्यता सचमुच पृथ्वी को बचाना चाहती है, तो उसे केवल पर्यावरणीय नीतियों पर ही नहीं, बल्कि युद्ध की मानसिकता पर भी गंभीरता से विचार करना होगा। जब तक राष्ट्र अपनी शक्ति का प्रदर्शन युद्ध के मैदानों में करते रहेंगे, तब तक पर्यावरण संरक्षण की सारी घोषणाएं शब्दों के जंगल से अधिक कुछ नहीं होंगी।

युद्ध पृथ्वी के उस संतुलन को नष्ट करते हैं, जिसे बनाने में प्रकृति को लाखों वर्ष लगे हैं। इसलिए पृथ्वी को बचाने की सबसे पहली शर्त ही यही है कि उसे युद्धभूमि बनने से रोका जाए। अन्यथा इतिहास यह लिखेगा कि मनुष्य ने पृथ्वी को बचाने के लिए असंख्य भाषण दिए, अनगिनत संकल्प लिए, लेकिन जब निर्णायक क्षण आया, तो उसने अपने ही हाथों से उस धरती की कोख में बारूद भर दिया, जिस पर मानव और मानवता का पूरा भविष्य टिका हुआ है। इस लेख में लेखक के निजी विचार हैं।

मलयालम को ताकतवर बनाने का श्रेय लेने की होड़

(उमेश चतुर्वेदी)

भाषायी अस्मिता के लिहाज से देखें तो केरल का यह कदम बेहद क्रांतिकारी और भारतीय भाषाओं के हित में है। लेकिन कर्नाटक की आपत्तियों को भी अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। यहां ध्यान दिया जाना चाहिए कि केरल के कासरगोड जिले में मलयालम की बजाय कन्नड़ भाषी लोग ज्यादा है।

केरलम् में विधानसभा चुनावों के बीच मलयालम को राज्य की आधिकारिक भाषा का दर्जा मिलने का श्रेय लेने का सियासी खेल बढ़ता जा रहा है। राज्य का नाम केरलम् किया जाना और इसके हफ्तेभर बाद ही मलयालम को आधिकारिक भाषा की मंजूरी मिलना कुछ लोगों की नजर में भले ही संयोग हो, लेकिन ऐसा नहीं है। राज्य में विधानसभा चुनाव की रणभेरी बजने की औपचारिकता भर बाकी है। इस संदर्भ में राजनीतिक दलों द्वारा इन दोनों कदमों का श्रेय लेने की होड़ मचना स्वाभाविक है। लेकिन भाषा विधेयक को लेकर केरल की सीमाओं के बाहर सवाल भी उठने शुरू हो गए हैं। इसमें दो राय नहीं कि गैर हिंदीभाषी इलाके अपनी भाषाओं और सांस्कृतिक परंपराओं को अपनी अस्मिता से जोड़कर देखते हैं। हिंदीभाषी राज्यों में अपनी हिंदी या स्थानीय भाषाओं को लेकर ऐसी सोच नहीं दिखती।

मलयालम को केरलम् की आधिकारिक भाषा बनाने की मांग बहुत पुरानी है। इस दिशा में पहला प्रयास करीब दस साल पहले कांग्रेस की अगुआई वाली संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा यानी यूडीएफ की सरकार ने किया था। 2015 में ओमन चांडी सरकार ने इस विधेयक को पारित कराया था। लेकिन तब इस विधेयक पर पड़ोसी कर्नाटक सरकार ने कड़ा एतराज जताया था। जब इस विधेयक को मंजूरी के लिए राष्ट्रपति के पास भेजा गया तो राष्ट्रपति ने इसे 1963 के ऑफिशियल भाषा एक्ट के नियमों को हटाकर जमा करने के सुझाव के साथ वापस भेज दिया था। फिर दस साल बाद मौजूदा वाममोर्चा की सरकार ने इसे नए रूप में पारित किया। इस बार भी कर्नाटक इस कानून का विरोध कर रहा है।

अब तक केरल में अंग्रेजी के साथ ही मलयालम को आधिकारिक भाषा के तौर पर प्रतिष्ठा रही है। लेकिन नए कानून के तहत सरकारी और सरकारी अनुदान प्राप्त स्कूलों में कक्षा 10 तक मलयालम को पहली भाषा के तौर पर अनिवार्य रूप से पढ़ाना जरूरी होगा। इसके साथ ही अदालती फैसलों और कार्यवाही भी अनिवार्य तौर पर मलयालम भाषा में अनूदित की जाएंगी। अब से राज्य विधानसभा में सभी बिल और अध्यादेश मलयालम में पेश किए जाएंगे। इसके साथ ही, अंग्रेजी में प्रकाशित महत्वपूर्ण केंद्रीय और राज्य कानूनों का भी मलयालम में अनुवाद होगा। नए कानून के तहत सूचना तकनीकी विभाग को मलयालम के प्रभावी इस्तेमाल के लिए ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर और इंस्ट्रूमेंट विकसित करने की जिम्मेदारी दी जा रही है। राज्य सचिवालय में मौजूदा पर्सनल एंड एडमिनिस्ट्रेटिव रिफॉर्म्स (ऑफिशियल लैंग्वेज) विभाग का नाम बदलकर मलयालम भाषा विकास विभाग किया जा राह है। इन कदमों के साथ ही राज्य में मलयालम भाषा विकास निदेशालय भी गठित किया जाएगा।

भाषायी अस्मिता के लिहाज से देखें तो केरल का यह कदम बेहद क्रांतिकारी और भारतीय भाषाओं के हित में है। लेकिन कर्नाटक की आपत्तियों को भी अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। यहां ध्यान दिया जाना चाहिए कि केरल के कासरगोड जिले में मलयालम की बजाय कन्नड़ भाषी लोग ज्यादा है। राज्य मे इसी तरह तमिल, तुलु, गुजराती और कोंकणीभाषी लोग भी हैं। उनकी अपनी भाषाओं में पढ़ाई वाले स्कूल भी हैं। हालांकि मलयालम भाषा कानून का विरोध तमिल मूल के लोगों ने तो नहीं किया है, लेकिन कर्नाटक के तर्कों में उनकी भी बातें एक तरह शामिल हैं।

कर्नाटक सरकार का तर्क है कि यह कानून केरल में रहने वाले कन्नड़ भाषी अल्पसंख्यकों की भाषाई अस्मिता के लिए खतरा है। यह कानून, कर्नाटक भाषियों के अधिकारों का उल्लंघन है। कर्नाटक सीमा क्षेत्र विकास प्राधिकरण का तर्क है है कि कासरगोड और केरल के दूसरे कन्नड़ भाषी क्षेत्रों में भाषाई अल्पसंख्यक छात्र अभी स्कूलों में कन्नड़ को पहली भाषा के तौर पर पढ़ते हैं। केरल में स्कूलों में हिंदी भी पढ़ाई जाती रही है। इसलिए माना जाता है कि केरल में हिंदीविरोधी माहौल नहीं है। लेकिन दिलचस्प यह है कि केरल के विद्वान भी इस कानून के पक्ष में तर्क देते वक्त केंद्र सरकार पर केरल में हिंदी थोपने का आरोप लगाने से नहीं हिचक रहे। दिलचस्प यह है कि ऐसा ही आरोप कर्नाटक की ओर से लगाया जा रहा है, बस वहां हिंदी की जगह मलयालम को थोपे जाने की बात हो रही है।

केरल सरकार ने हालांकि सफाई दी है कि जिनकी मातृभाषा तमिल, कन्नड़, तुलु या कोंकणी है, उनके लिए भी कानून में प्रावधान हैं। इस कानून में इस बात की चर्चा है कि राज्य के भाषायी अल्पसंख्यक अपनी भाषा में राज्य सचिवालय, विभागों और स्थानीय सरकारी कार्यालयों से पत्राचार कर सकेंगे। इसके साथ ही, मलयालम के अलावा दूसरी मातृभाषा वाले छात्रों को नेशनल एजुकेशन प्रोग्राम में शामिल भाषाओं में पढ़ाई कर सकेंगे। इसी तरह दूसरे राज्यों या विदेश से आने वाले छात्रों को नौंवी, दसवीं और हायर सेकेंडरी स्तर पर मलयालम की परीक्षा देने से छूट मिलेगी।

मलयालम को आधिकारिक भाषा बनाने का स्थानीय नागरिक स्वागत तो कर रहे हैं, लेकिन कुछ लोगों का मानना है कि इस कानून के नाम से ही अलगाववादी और वर्चस्ववादी झलक मिलती है।, केरल के बौद्धिकों के एक वर्ग का कहना है कि बेहतर होता है कि इस कानून का नाम 'मलयालम भाषा एक्ट 2025' की जगह 'केरल स्टेट लैंग्वेज एक्ट 2025' होता। इससे समावेशी संदेश जाता। यहां के बौद्धिकों का तर्क है कि इस विधेयक में मलयालम की जगह बेहतर होता कि राज्य में प्रयोग में लाई जाने वाली तमिल,कन्नड़, कोंकणी, तुलु और गुजराती का भी जिक्र होता। केरल में जंगलों और दूरदराज के इलाकों में रहने वाले लोगों की अपनी भाषाएं भी हैं। वे मलयालम का इस्तेमाल कम करते हैं। इसलिए एक वर्ग का मानना है कि उनकी भाषाओं की अस्मिता की रक्षा का बोध भी इस कानून में होना चाहिए था। बेशक केरल के विधानसभा चुनाव में मलयालम को आधिकारिक दर्जा मिलना बड़ा मुद्दा होगा।

अमेरिका-ईरान युद्ध से अब इंटरनेट सेवाओं पर संकट के बादल

अमेरिका-इजरायल व ईरान युद्ध के चलते अभी विश्व के देश ऊर्जा संकट का समाधान तो निकाल ही नहीं पा रहे कि डिजिटल सेवाओं के बाधित होने के भय से दुनिया के देशों की सरकारों की जान सांसत में आने लगी हैं। इंटरनेट आज प्रमुख आवश्यकताओं में से एक हो गया है। एयर लाइंस, बैंकिंग सेवाएं, संचार व्यवस्था जिसमें संवाद कायम करने से लेकर सभी तरह की डिजिटल सेवाएं, स्टॉक मार्केट आदि आदि बुरी तरह से प्रभावित होने की संभावनाओं से नकारा नहीं जा सकता। आज इंटरनेट पर निर्भरता बहुत अधिक हो गई है। अमेरिका-ईरान युद्ध को जिस तरह से शुरुआती दौर में ट्रंप द्वारा हलके में लिया जा रहा था वास्तव यह ट्रंप की गलत फहमी ही रही। वैसे भी रुस यूक्रेन के युद्ध से ही अमेरिका को सबक लेना चाहिए था।

(डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा)

इंटरनेट की दुनिया अभी छह दशक भी पूरे नहीं कर पाई है कि बड़ी समस्या सामने आ गई है। इसमें कोई दो राय नहीं कि 1960 में जब जेसीआर लिकलाइडर ने वैश्विक नेटवर्क की कल्पना की थी उस समय यह सोचा भी नहीं होगा कि तीन से चार दशक में ही इंटरनेट संचार जगत में बड़ी क्रांति लाने में सफल हो जाएगा।

अमेरिका-इजरायल व ईरान युद्ध के चलते अभी विश्व के देश ऊर्जा संकट का समाधान तो निकाल ही नहीं पा रहे कि डिजिटल सेवाओं के बाधित होने के भय से दुनिया के देशों की सरकारों की जान सांसत में आने लगी हैं। इंटरनेट आज प्रमुख आवश्यकताओं में से एक हो गया है। एयर लाइंस, बैंकिंग सेवाएं, संचार व्यवस्था जिसमें संवाद कायम करने से लेकर सभी तरह की डिजिटल सेवाएं, स्टॉक मार्केट आदि आदि बुरी तरह से प्रभावित होने की संभावनाओं से नकारा नहीं जा सकता। आज इंटरनेट पर निर्भरता बहुत अधिक हो गई है। अमेरिका-ईरान युद्ध को जिस तरह से शुरुआती दौर में ट्रंप द्वारा हलके में लिया जा रहा था वास्तव यह ट्रंप की गलत फहमी ही रही। वैसे भी रुस यूक्रेन के युद्ध से ही अमेरिका को सबक लेना चाहिए था। दोनों देश पास पास होने और संसाधनों की दृष्टि से रुस अधिक ताकतवर होने के बावजूद आज तक कोई अंत नहीं दिखाई दे रहा। अमेरिका ईरान युद्ध के साइड इफेक्ट के रुप में अभी तो उर्जा संकट है पर जिस तरह के हालात बनते जा रहे हैं आने वाले समय में मध्य पूर्व के देशों में पेयजल और दुनिया के देशों के लिए इंटरनेट सेवाओं के प्रभावित होने की संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता। दरअसल जिस तरह से कच्चे तेल और एलपीजी आदि की दुनिया के देशों में सप्लाई हार्मुज जलडमरुमध्य के रास्ते होने और ईरान द्वारा इस रास्ते में अवरोध बनने से उर्जा संकट गंभीर रुप लेता जा रहा हैं। ठीक यही समस्या इंटरनेट को लेकर हो सकती है। कारण साफ है। युद्ध समाप्ति या यों कहें कि सीज फायर के आसार अभी तक बनते नहीं लग रहे तो दूसरी और ज्यों ज्यों एक दूसरे को नुकसान पहुंचाने के अधिक प्रयास होंगे तो ईरान हथियार के रुप में समुद्र में बिछी केबल्स को भी नुकसान पहुंचाने में कोई गुरेज नहीं करेगा। दुनिया के इंटरनेट ट्रैफिक का प्रमुख रास्ता भी यही है। एक मोटे अनुमान के अनुसार 20 प्रतिशत ट्रैफिक हार्मुज और लालसागर के रास्ते से गुजरता है। हार्मुज जलडमरुमध्य तो हालात यहां तक है कि सकरे स्थान पर तो मात्र 200 फीट की गहराई पर ही सबमैरिन केबल लाईने बिछी हुई है। लगभग यही हालात लालसागर के हैं। वहां भी इंटरनेट

सेवाओं के लिए सबमैरिन केबल्स बिछी हुई है। ऐसा कयास लगाया जा रहा है कि ईरान द्वारा हार्मुज जलडमरुमध्य क्षेत्र में सुरंगे बिछाने का काम किया जा रहा है और इससे अन्य नुकसान होने के साथ ही फाइबर केबल्स के भी क्षतिग्रस्त होने की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता। अधिकांश प्रमुख सेवा प्रदाताओं ने इसी क्षेत्र में डेटा सेंटर स्थापित कर रखे हैं। जानकारों के अनुसार हार्मुज क्षेत्र से करीब 20 और लालसागर क्षेत्र से 17 केबल्स गुजरती है। 2024 में भी लाल सागर क्षेत्र में हूती हमलों के दौरान केबल प्रभावित हो चुकी है। वर्तमान हालातों में यदि सबमैरिन केबल्स प्रभावित भी होती है तो हालात जिस तरह के हैं उनमें प्रभावित केबल्स को ठीक करनों में महीनों ही क्या साल भी लग सकता है और ऐसे में दुनिया के देश एक नए संकट के दौर से गुजरने को मजबूर हो जाएंगे।

इंटरनेट की दुनिया अभी छह दशक भी पूरे नहीं कर पाई है कि बड़ी समस्या सामने आ गई है। इसमें कोई दो राय नहीं कि 1960 में जब जेसीआर लिकलाइडर ने वैश्विक नेटवर्क की कल्पना की थी उस समय यह सोचा भी नहीं होगा कि तीन से चार दशक में ही इंटरनेट संचार जगत में बड़ी क्रांति लाने में सफल हो जाएगा। 1969 में अमेरिकी रक्षा विभाग द्वारा एंडवास्ड रिसर्च प्रोजेक्टस एजेन्सी नेटवर्क के लिए विंट सर्फ और बॉब काह्न ने टीसीपी/आईपी प्रोटोकाल विकसित किया। इंटरनेट की दुनिया में आमूलचूल बदलाव तो टिम बर्नर्स ली द्वारा ड्ब्लूड्ब्लूड्ब्लू वर्ल्ड वाइड वेव विकसित किया तो इससे संचार दुनिया ही बदल गई। भारत में सही तौर पर तो 1995 में वीएसएनएल ने इंटरनेट सेवाओं का विस्तार किया। आज बड़ी समस्या यह है कि अमेजन, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट आदि के विशाल डेटा सेंटर यूएई और सउदी आदि देशों में हैं। यही कारण है कि समुद्री रास्ते से फाइबर केबल्स भी हार्मुज जलडमरुमध्य व लालसागर होते हुए ही हैं। यदि केबल्स में व्यवधान होती है या किसी तरह से जाने अनजाने नुकसान पहुंचता है तो वीडियों काल, इेमेल आदि से लेकर इंटरनेट से जुड़ी सभी तरह की सेवाएं प्रभावित हो सकती है और इसीको लेकर चिंता की लकीरें खिंचने लगी है।

वैसे आज संयुक्त राष्ट संघ तो बेमानी हो गया है। दुनिया के देशों के अलग अलग बने संगठन चाहे वे नाटो हो या ब्रिक्स या पिछले कुछ सालों के देश-दुनिया के हालातों में बेमानी हो गए हैं। वैश्विक हालात दिन प्रतिदिन बद से बदतर होते जा रहे हैं। ऐसे में सवाल यह उठता है कि कोई ना कोई ऐसी नियामक संस्था या कोई ना कोई इस तरह की बाध्यकारी व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए जिससे दुनिया के देशों और उनके नागरिकों से जुड़ी सुविधाओं से छेड़छाड़ ना हो इस तरह की व्यवस्था किया जाना आवश्यक है। किसी भी देश या संगठन को इस तरह की सार्वभौमिक सेवाओं को बाधित करने से रोकने की व्यवस्था सुनिश्चित होनी चाहिए। क्योंकि दुनिया के देशों में कौन कब सिरफिरा नेता अपने अहम् की शांति के लिए दुनिया को संकट में ड़ाल दे इसकी संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता। आज ऊर्जा, पानी, स्वास्थ्य, डिजिटल दुनिया आदि आदि ऐसी सेवाएं है जिनके प्रभावित होने का असर समूची नहीं तो अधिकांश देशों पर पड़ता है और यह दुष्प्रभाव केवल देशों तक ही नहीं अपितु वहां निवास करने वाले करोड़ों नागरिकों पर सीधे सीधे पड़ता है। ऐसे में पूरी वैश्विक व्यवस्था को ही ठप्प करने वाले प्रयासों पर अंकुश या कारगर रोक लगाया जाना जरुरी हो जाता है। दो देशों के टकराव के चलते समूची दुनिया या दुनिया के अधिकांश देशों को संकट में नहीं ड़ाला जा सकता। दुनिया के देशों को इस दिशा में ठोस पहल करनी ही होगी। (इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

ब्लोटिंग और गैस के लिए बासी मुंह चबाएं आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों के पत्ते

क्या आपका पेट हमेशा भरा-भरा और फूला हुआ रहता है, क्या आपको थोड़ा सा खाते ही गैस बनने लगती है? अगर हां, तो पेट से जुड़ी इन समस्याओं के लिए अब आपको दवाएं लेने की जरूरत नहीं है। इन समस्याओं के इलाज के लिए आप अपने आसापास मिलने वाले पुदीने की तरह कुछ औषधीय पत्ते चबा सकते हैं।

पेट फूलने की समस्या को मेडिकल भाषा में ब्लोटिंग कहते हैं। इसकी वजह से आपको पेट में गैस महसूस हो सकती है और उसके साथ पेट में ऐंठन, दर्द और सूजन महसूस हो सकती है। दरअसल इस स्थिति में पेट में हवा भर जाती है जिससे पेट हमेशा भरा-भरा महसूस होता है। इसकी वजह से आपको कम भूख लगती है या थोड़ा सा खाते ही पेट भर जाता है। देर तक बैठे रहना, पुराना कब्ज कार्बोनेट ड्रिंक्स पीना एक साथ बहुत ज्यादा भोजन करना आदि इसके कारण हो सकते हैं। बेशक यह समस्या इतनी गंभीर नहीं है लेकिन अगर इसका समय से इलाज नहीं किया गया, तो आपको कई घातक समस्याएं हो सकती हैं। ब्लोटिंग और गैस के लिए वैसे तो कई दवाएं उपलब्ध हैं लेकिन कुछ आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों के पत्ते चबाने से आपको तुरंत राहत मिल सकती है।

सौंफ के पत्ते

सौंफ का उपयोग पारंपरिक रूप से पेट दर्द, सूजन, गैस और कब्ज सहित कई पाचन विकारों के लिए किया जाता है। सौंफ के पत्ते चबाने से अल्सर को रोकने और पेट फूलना कम हो सकता है। इन हरे पत्तों में सूजन और कब्ज के लक्षणों को कम करने की क्षमता होती है।

अजवाइन के पत्ते

जो लोग खाने के बाद लगातार सूजन या भारीपन का अनुभव करते हैं, उनके लिए अजवाइन की पत्तियां बेहतर उपचार हैं। अजवाइन के पत्ते पाचन में सुधार, चयापचय को बढ़ावा देने, अम्लता को दूर करने और गैस से राहत दिलाने में मदद कर सकते हैं।

करी पत्ते

खाली पेट करी पत्ते का सेवन विशेष रूप से बेहतर पाचन स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ है। जब खाली पेट इसका सेवन किया जाता है, तो करी पत्ता पाचन एंजाइमों को उत्तेजित करता है और मल त्याग का समर्थन करता है। यह आपको कब्ज से राहत दिलाने में भी मदद कर सकता है।

पुदीना के पत्ते

पुदीने की हरी पत्तियों के ठंडे और ताज़गी देने वाले गुण सूजन को ठीक करने का सबसे अच्छा उपाय है। पुदीना सूजन और पाचन संबंधी समस्याओं को जल्द से जल्द दूर करता है। इसमें पेट की ऐंठन को कम करने की क्षमता होती है। अगर आपको हमेशा गैस या पेट फूलने की समस्या रहती है, तो आप रोजाना सुबह कुछ पत्ते चबा सकते हैं या फिर पुदीने की चाय पी सकते हैं।

जामुन के पत्ते

जामुन के पत्तों में पाचन वाले गुण होते हैं और यह सभी पाचन समस्याओं के लिए एक बेहतर औषधि है। इसके एंटी-फ्लैटुलेंट गुण एलिमेंटरी कैनाल में गैस को कम करने में मदद करते हैं, जिससे पेट फूलना, कब्ज और सूजन को कम करने में मदद मिलती है। इसमें एंटासिड गुण होते हैं जो पेट में अत्यधिक एसिड के निर्माण को रोकते हैं और इस तरह अपच, अल्सर और गैस्ट्राइटिस का इलाज करते हैं।

संपूर्ण स्वास्थ्य को प्रभावित करता है लिवर

दिल, किडनी और फेफड़ों की तरह लिवर भी शरीर का महत्वपूर्ण अंग है। लेकिन जब बात इसके स्वास्थ्य की आती है, तो अक्सर इसे अनदेखा कर दिया जाता है। आपको बता दें कि लिवर एक ऐसा अंग है, जो शरीर को स्वस्थ रखने के लिए कई तरह के काम करता है। लिवर शरीर का दूसरा सबसे बड़ा अंग है जिसका काम पाचन, चयापचय, विषाक्त पदार्थों को हटाना, पोषक तत्वों का भंडारण करना है। फिटनेस गुरु एंड होलिस्टिक एक्सपर्ट के अनुसार, लिवर संपूर्ण स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए इसे स्वस्थ, साफ और मजबूत रखना जरूरी है। गर्मियों के मौसम में मिलने वाली ऐसी कई चीजें हैं, जिन्हें खाने में शामिल करके आप अपने लिवर को नैचुरली साफ और मजबूत बना सकते हैं।

लिवर को स्वस्थ रखने का घरेलू उपाय- ग्रीन टी

ग्रीन टी से शरीर को अनगिनत फायदे होते हैं। यह एंटीऑक्सिडेंट और विटामिन सी का एक बेहतर स्रोत है। वर्ल्ड जर्नल ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, यह शरीर में फैट को कम करने में मदद कर सकती है।

लिवर के लिए वरदान है नींबू

नींबू को गर्मियों का तोहफा खा जाता है। इन दिनों शरीर को तरोताजा और स्वस्थ रखने के लिए इससे बेहतर विकल्प कुछ नहीं है। आपको लिवर सही शरीर के सभी अंगों को साफ और स्वस्थ रखने के लिए रोजाना नींबू पानी पीना चाहिए। नींबू विटामिन सी से भरपूर करता है और विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। यह डिहाइड्रेशन को रोकता है और गर्मी के दिनों शरीर को ठंडा रखता है।

लिवर को मजबूत बनाते हैं अंगूर

मीठे और रसीले अंगूर खाना भला कौन पसंद नहीं करता है? अंगूर विटामिन सी और एंटीऑक्सिडेंट का पावरहाउस हैं। अंगूर लिवर को डिटॉक्स यानी उसकी गंदगी को साफ करने और सूजन से लड़ने में मदद करते हैं।

लिवर की साफ रखने के लिए खाएं दही

गर्मियों में ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए, जो पेट के लिए हल्के होते हैं और दही निश्चित रूप से इस सूची में सबसे ऊपर है। यह हल्का, ठंडा होता है और आपको भीतर से पोषित रखने में मदद करता है। दही प्रोबायोटिक्स का बेहतर स्रोत है। कई अध्ययनों के अनुसार, यह लीवर में फैट को कंट्रोल करता है।

लिवर को स्वस्थ रखेगा लहसुन

लहसुन में एलिसिन और सेलेनियम जैसे यौगिक उच्च मात्रा में होते हैं जो लीवर को किसी भी जहरीले नुकसान से बचाते हैं। रोजाना रात को सोने से पहले लहसुन की दो कलियां लें।

लिवर को स्वस्थ रखने का उपाय- सहजन

हरी सब्जियों में कई तरह के क्लीजिंग कंपाउंड होते हैं, जो लिवर को नेचुरली रूप से साफ करने में मदद करते हैं। ऐसी ही एक लोकप्रिय हरी सब्जी है सहजन। कई जैव रासायनिक परिणामों से पता चला है कि सहजन में लिवर फाइब्रोसिस के लक्षणों को कम करने की क्षमता होती है।

लिवर को मजबूत बनाने का नुस्खा-आंवला

आंवला का आयुर्वेद में व्यापक रूप से उपयोग किया गया है जो लिवर के कार्य को समर्थन देता है और शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। यह लिवर के कामकाज को बेहतर बनाने में भी मदद करता है। एक गिलास गर्म पानी में एक चम्मच सूखे आंवले के पाउडर को मिलाकर सुबह खाली पेट पीने से बेहतर परिणाम मिलते हैं।

लिवर को साफ करता है हल्दी

हल्दी एक अद्भुत मसाला है जो लिवर को डिटॉक्सीफाई करने में मदद करता है। यह एंजाइम को बढ़ावा देने में मदद करता है जो शरीर से आहार विषाक्त पदार्थों को बाहर निकाल सकता है। सुबह सबसे पहले एक गिलास गर्म पानी के साथ आधा चम्मच हल्दी और एक चुटकी काली मिर्च का सेवन करें।

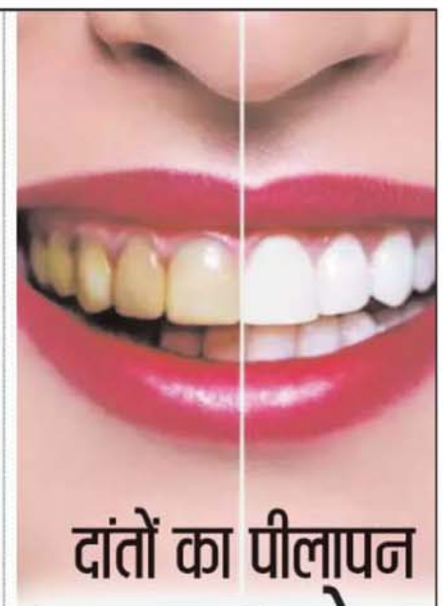

दांतों का पीलापन छुड़ाकर सफेद करेंगी ये 5 चीजें

मजबूत और सफेद दांत भला कौन नहीं चाहता है। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं, दांत पीले हो जाते हैं। दरअसल चबाने और खाने-पीने के एसिड के संपर्क में आने से दांतों की तामचीनी दूर हो जाती है। तामचीनी उम्र के साथ पतली हो जाती है, जिससे दांत पीले होने लगते हैं। दांतों को सफेद करने के कई इलाज मौजूद हैं लेकिन घरेलू चीजों के जरिए भी पीले दांतों को सफेद मोती जैसे चमकाए जा सकते हैं। खाने-पीने की गलत आदतों और ओरल हाइजीन का ध्यान नहीं रखने की वजह से बहुत से लोगों को दांतों की विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी ही एक गंभीर समस्या दांतों का पीलापन है। जाहिर है दांतों का पीला होना किसी के लिए भी शर्मिंदगी का कारण बन सकता है। वैसे तो दांतों में चिपका मैल या पीलापन रोजाना ब्रश करने से साफ हो जाता है लेकिन कई बार यह मजबूती से चिपक जाता है, जिसे छुड़ाना आसान नहीं होता है। मजबूत और सफेद दांत भला कौन नहीं चाहता है। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं, दांत पीले हो जाते हैं।

पीले दांतों को सफेद कैसे करें? बेशक दांतों को सफेद करने के कई इलाज मौजूद हैं लेकिन घरेलू चीजों के जरिए भी पीले दांतों को सफेद मोती जैसे चमकाए जा सकते हैं। हम आपको दांतों का पीलापन हटाने के लिए घरेलू उपाय बता रहे हैं, जिनसे आपको डेंटिस्ट के पास जाए बिना दांतों को मजबूत और उनका पीलापन हटाने में मदद मिल सकती है।

कोको पाउडर

इसके लिए आपको कोको पाउडर और पानी या नारियल का तेल चाहिए। सबसे पहले कोको पाउडर को नारियल के तेल या पानी के साथ मिलाएं। इसका एक पेस्ट बना लें। इस मिश्रण से अपने दांतों को हमेशा की तरह ब्रश करें।

नीम के पत्ते

इसके लिए आपको नीम के पत्ते और पानी चाहिए। सबसे पहले नीम के पत्तों को पानी के बर्तन में उबालने के लिए रख दें। इसे छान लें ताकि तरल साफ हो जाए। इसे ठंडा होने दें और इस घोल से गरारे करें।

एप्सम साल्ट

नमक और पानी को बराबर भागों में मिला लें। तब तक हिलाएं जब तक कि नमक पूरी तरह से घुल न जाए। इस मिश्रण को टूथब्रश से अपने दांतों पर लगाएं। आप इससे गरारे भी कर सकते हैं और फिर साफ पानी से अपना मुंह धो लें।

अदरक और नमक

अदरक के एक छोटे टुकड़े को पीस लें। या इसे कद्दूकस भी किया जा सकता है। 1/4 छोटा चम्मच नमक लेकर अदरक में डाल दें। नींबू का एक टुकड़ा काटें, मिश्रण में रस निचोड़ें और फिर से अच्छी तरह मिक्स कर लें। इसे टूथब्रश से दांतों पर लगाएं।

पुदीने के पत्ते और नारियल का तेल

पुदीने के पत्तों को पीसकर नारियल के तेल में मिला लें। अच्छी तरह मिलाएं और इस मिश्रण को टूथब्रश से अपने दांतों पर लगाएं। पुदीने का अधिक प्रयोग न करें, 3-5 पत्ते पर्याप्त हैं।

बेशक हड्डियों को मजबूत बनाने के लिए कैल्शियम जरूरी है लेकिन इसे जल्दी पचाने के लिए विटामिन डी भी जरूरी है, सुबह की धूप के अलावा कई खाने की चीजों में यह पोषक तत्व पाया जाता है।

कैल्शियम पचाने के लिए जरूरी है विटामिन डी

हड्डियों का कमजोर होना आपके पूरे शरीर के लिए खतरे की घंटी है। आपका पूरा शरीर हड्डियों के ढांचे पर टिका हुआ है। हड्डियों में किसी भी तरह कमजोरी आपको मोहताज बना सकती है। यही वजह है कि हड्डियों की देखभाल के लिए हर संभव उपाय करने चाहिए। हड्डियों की सेहत खराब होने से आपको रिकेट्स और ऑस्टियोपोरोसिस जैसी खतरनाक बीमारियों का खतरा हो सकता है और गुजरते समय के साथ हड्डी टूटने का खतरा बढ़ सकता है। आपकी हड्डियों को स्वस्थ और मजबूत रखने के लिए पर्याप्त कैल्शियम और आपके शरीर को कैल्शियम को अवशोषित करने में मदद करने के लिए विटामिन-डी की जरूरत होती है। इसका मतलब यह है कि आपको कैल्शियम के अलावा विटामिन-डी से भरपूर खाद्य पदार्थों का भी खूब सेवन करना चाहिए।

रोजाना कितने कैल्शियम की जरूरत होती है?

विटामिन-डी से पहले आपको यह जानना जरूरी है कि हड्डियों को स्वस्थ रखने के लिए आपको रोजाना कितने कैल्शियम की जरूरत है। एक रिपोर्ट के अनुसार, वयस्कों को एक दिन में 700mg कैल्शियम की आवश्यकता होती है।

रोजाना कितने विटामिन-डी की जरूरत

वयस्कों को एक दिन में विटामिन-डी की 10 माइक्रोग्राम (400 इंटरनेशनल यूनिट या आईयू) की आवश्यकता होती है। विटामिन डी को खाद्य पदार्थों से प्राप्त करना मुश्किल है इसलिए आप इसे सुबह की धूप से भी प्राप्त कर सकते हैं।

अंडे की जर्दी

अंडे प्रोटीन और कैल्शियम के अलावा विटामिन डी का भी बढ़िया स्रोत है। एक बड़े अंडे की जर्दी 36.7 IU विटामिन डी प्रदान करती है। आप अपने दिन की शुरुआत दो अंडों के साथ कर सकते हैं।

संतरे का रस

इसके लिए आप फोर्टिफाइड ओरेंज जूस ले सकते हैं जिससे आपको 33.4 IU विटामिन डी मिल सकता है। हालांकि सभी फोर्टिफाइड फूड्स में विटामिन डी की मात्रा उतनी अधिक नहीं होती है, जितनी फिश में होती है।

गाय का दूध

8-औंस स्किम्ड गाय के दूध के गिलास से आपको 107.5 IU विटामिन डी मिल सकता है जबकि सोया दूध की इतनी ही मात्रा से आपको 97.6 IU विटामिन डी मिल सकता है।

विटामिन डी के लिए खाएं मशरूम

मशरूम उन लोगों के लिए विटामिन डी का सबसे बढ़िया स्रोत है, जो पशु उत्पाद नहीं खाते हैं। बेशक इसमें बहुत ज्यादा नहीं है लेकिन 100 ग्राम मशरूम (लगभग एक कप) से आपको 8 IU विटामिन डी मिल सकता है।

नेपाल में बड़ा राजनीतिक उलटफेर : पूर्व प्रधानमंत्री केपी ओली गिरफ्तार

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल की राजनीति में आज उस समय हड़कंप मच गया जब पुलिस ने पूर्व प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को उनके आवास से गिरफ्तार कर लिया। यह कार्रवाई नए प्रधानमंत्री बालेन शाह के शपथ ग्रहण के ठीक अगले दिन की गई है, जिससे देश में सत्ता परिवर्तन के साथ ही जवाबदेही का नया दौर शुरू होता दिख रहा है। भक्तपुर स्थित आवास से हुई गिरफ्तारी शनिवार सुबह तड़के नेपाल पुलिस की एक विशेष टीम ने भक्तपुर के गुंडु स्थित केपी ओली के घर पर छापेमारी की और उन्हें हिरासत में ले लिया। इसी कड़ी में पूर्व गृह मंत्री रमेश लेखक को भी सुबह करीब 5 बजे सूर्यविनायक इलाके से गिरफ्तार किया गया है।

जेन-जेड प्रोटेस्ट और 77 मौतों का मामला: यह पूरी कार्रवाई पिछले साल हुए जेन-जेड (युवा पीढ़ी) के हिंसक प्रदर्शनों की जांच के आधार पर की गई है। गंभीर लापरवाही: पूर्व जज गौरी बहादुर कार्की की अध्यक्षता वाले जांच आयोग ने अपनी रिपोर्ट में ओली सरकार पर 'गंभीर लापरवाही' बरतने का आरोप लगाया है।

जान-माल का नुकसानः इन प्रदर्शनों के दौरान पुलिस और

जेन-जेड प्रोटेस्ट में 77 मौतों पर लापरवाही का आरोप

प्रदर्शनकारियों के बीच हुई झड़पों में 77 लोगों की जान चली गई थी और देश की अरबों रुपये की संपत्ति खाक हो गई थी। इंटेलिजेंस की अनदेखीः रिपोर्ट के अनुसार, अधिकारियों को संभावित हिंसा की चेतावनी पहले ही मिल चुकी थी, लेकिन सरकार ने सही कदम नहीं उठाए। प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ लेने के तुरंत बाद बालेन शाह ने एक कैबिनेट बैठक की अध्यक्षता की। इस बैठक में जांच आयोग की रिपोर्ट को तत्काल प्रभाव से लागू करने का फैसला लिया गया। आरोपः केपी ओली पर आरोप है कि जब देश जल रहा था, तब वे जिम्मेदारी निभाने के बजाय काठमांडू छोड़कर भाग गए थे। अब उन पर केस चलाया जाएगा, जिसमें 10 साल तक की जेल की सजा हो सकती है। ओली की गिरफ्तारी के बाद काठमांडू घाटी समेत पूरे नेपाल में सुरक्षा व्यवस्था बेहद सख्त कर दी गई है। काठमांडू की सड़कों पर भारी पुलिस बल तैनात है ताकि किसी भी तरह के विरोध प्रदर्शन या हिंसा को रोका जा सके। गृह मंत्रालय ने संकेत दिए हैं कि इस मामले में कई अन्य बड़े अधिकारियों और नेताओं की भी गिरफ्तारी हो सकती है। ओली और रमेश लेखक को पुलिस जल्द ही आर्म्ड पुलिस फोर्स की महाराजगंज स्थित बटालियन नंबर-2 में शिफ्ट करेगी। दोनों नेताओं को गिरफ्तारी के बाद मेडिकल जांच के लिए अस्पताल ले जाया गया है। अधिकारियों ने बताया कि मेडिकल जांच पूरी होते ही दोनों को बटालियन में रखने की व्यवस्था कर ली गई है। यह कदम जारी कस्टडी प्रक्रिया के तहत उठाया जा रहा है। अधिकारियों ने बताया कि महाराजगंज स्थित बटालियन नंबर-2 में दोनों नेताओं को रखने की पूरी तैयारी कर ली गई है। मेडिकल जांच के बाद उन्हें वहां शिफ्ट कर दिया जाएगा। इस मामले की जांच एक आयोग ने की थी, जिसकी अगुआई पूर्व जज गौरी बहादुर कार्की ने की। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि प्रदर्शन के दौरान हालात को संभालने में गंभीर लापरवाही हुई। रिपोर्ट के अनुसार, अधिकारियों ने पहले से मिली चेतावनी (इंटेलिजेंस) के बावजूद सही कदम नहीं उठाए, जिससे हालात बिगड़ गए और कई लोगों की जान चली गई।

ट्रंप ने नाटो को 'कागजी शेर' कहा, सहयोगियों पर सवाल उठाए

वाशिंगटन , एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने नाटो की कड़ी आलोचना करते हुए उसे 'कागजी शेर' बताया और सवाल उठाया कि क्या वाशिंगटन को उन सहयोगियों का बचाव जारी रखना चाहिए, जो उनके अनुसार जरूरत के समय अमेरिका का समर्थन करने में विफल रहे। मियामी में फ्यूचर इन्वेस्टमेंट इनिशिएटिव प्रायोरिटी समिट में बोलते हुए ट्रंप ने कहा कि जब अमेरिका को सबसे ज्यादा जरूरत थी, तब गठबंधन ने उसका साथ नहीं दिया। ट्रंप ने गठबंधन के प्रति अमेरिकी प्रतिबद्धताओं पर पुनर्विचार का सुझाव दिया। उन्होंने कहा, 'अगर वे हमारे लिए मौजूद नहीं हैं, तो हम उनके लिए क्यों मौजूद रहेंगे?' उन्होंने नाटो की प्रतिक्रिया को 'एक बहुत बड़ी गलती' बताया।

ट्रंप ने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों समेत प्रमुख यूरोपीय नेताओं के साथ हुई बातचीत का जिक्र करते हुए कहा कि समर्थन की पेशकश सैन्य कार्रवाई समाप्त होने के बाद ही आई। उन्होंने मैक्रों के हवाले से कहा, 'युद्ध खत्म होते ही हम जहाज भेजेंगे।' ट्रंप ने आगे कहा, 'मुझे युद्ध खत्म होने के बाद उनकी जरूरत नहीं है।'

ट्रंप ने ब्रिटेन की प्रतिक्रिया की भी आलोचना करते हुए कहा कि विमानवाहक पोत कई हफ्तों बाद ही उपलब्ध कराए जाएंगे। ट्रंप ने देरी से मिल रहे समर्थन का मजाक उड़ाते हुए कहा, 'जब युद्ध खत्म हो जाएगा, तब हम वहां मौजूद होंगे।'

राष्ट्रपति ने जर्मनी की आलोचना करते हुए उनके नेतृत्व के इस बयान का जिक्र किया कि यह संघर्ष उनकी चिंता का विषय नहीं है। उन्होंने कहा, 'यह हमारा युद्ध नहीं है, हमें इससे कोई लेना-देना नहीं है,' इस टिप्पणी का क्रेडिट जर्मनी के चांसलर को दिया।

ट्रंप ने कहा कि समर्थन की कमी ने नाटो के बारे में उनके पुराने विचार को और मजबूत किया है। उन्होंने कहा, 'मैंने हमेशा कहा है कि नाटो एक कागजी शेर है, हम नाटो की मदद करते हैं, लेकिन वे हमारी कभी मदद नहीं करेंगे।'

सैमसंग ने भारत में आधुनिक परफॉर्मेंस और AI - संचालित प्रोडक्टिवटी के साथ लॉन्च किया गैलेक्सी बुक6

गुरुग्राम। सैमसंग, भारत के सबसे बड़ेकंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड, ने गैलेक्सी बुक6 सीरीज़ को लॉन्च कर दियाहै। इसकी शुरुआती कीमत 1,27,990 रुपये है। सैमसंग की सबसे एडवांस्डगैलेक्सी बुक सीरीज़ AI-पावर्ड प्रोडक्टिविटी को सटीक इंजीनियरिंग औरसंतुलित, स्लिम प्रोफाइल के जरिए नई ऊंचाइयों पर ले जाती है।

बेजोड़ परफॉर्मेंस- गैलेक्सी बुक6 सीरीज़ इंटेल० कोर™ अल्ट्रा सीरीज 3 प्रोसेसर्स द्वारासंचालित है, जो पिछले जेनरेशन की तुलना में 60% से ज्यादा तेज सीपीयू परफॉर्मेंस देता है। इससे तेज प्रोसेसिंग, सहज मल्टीटास्किंग और रिस्पॉन्सिव AI अनुभव मिलता है। इंटीग्रेटेड एनपीयू 50 TOPS तक की क्षमता प्रदानकरता है, जो इमेज क्लीनअप, तुरंत अनुवाद और इंटेलिजेंट सर्च जैसी AI-संचालित टास्क को क्लाउड पर निर्भर हुए बिना तुरंत पूरा करता है। गैलेक्सी बुक6 अल्ट्रा इस अनुभव को और बेहतर बनाता है — इसमें लेटेस्ट NVIDIA® GeForce RTX™ 5070 लैपटॉप जीपीयू दिया गया है, जोहाई-स्पीड AI इमेज जेनरेशन, स्मूथ वीडियो प्लेबैक और एडिटिंग तथाशानदार गेमिंग के लिए बेहतरीन परफॉर्मेंस देता है।

परफॉर्मेंस को बेहतर बनाने के लिए, गैलेक्सी बुक6 अल्ट्रा और प्रो में बड़ा ऑप्टिमाइज्ड वेपर चैंबर लगा है जो गर्मी को बेहतर तरीके से बांटता है। एन्हांस्ड फिन्स सतह क्षेत्र को बढ़ाते हैं, जिससे पिछले जेनरेशन की तुलना मेंकूलिंग एफिशिएंसी 35% बेहतर हो गई है। गैलेक्सी बुक6 अल्ट्रा मेंड्यूल-पाथ आउटलेट फैन और हीटसिंक भी है, जो गर्मी को प्रभावी ढंग सेसोखता और बाहर निकालता है। गैलेक्सी बुक6 अल्ट्रा और प्रो सीरीज़ मेंसैमसंग की सबसे लंबे समय तक चलने वाली गैलेक्सी बुक बैटरी दी गई है, जो 30 घंटे तक वीडियो प्लेबैक देती है। साथ ही सुपर-फ़ास्ट चार्जिंग सिर्फ30 मिनट में बैटरी को 63% तक रिचार्ज कर देती है।

अपग्रेडेड डिस्प्ले- गैलेक्सी बुक6 अल्ट्रा और प्रो में डायनैमिक एमोलेड 2X टचस्क्रीन दिया गया है, जो एचडीआर में 1000 निट्स तक पीक ब्राइटनेस और एसडीआर में 500 निट्स पीक ब्राइटनेस प्रदान करता है, जिससे बेहद साफ और जीवंतविज़ुअल्स मिलते हैं। विज़न बूस्टर टेक्नोलॉजी आसपास की रोशनी काविश्लेषण करके डिस्प्ले को आउटडोर वातावरण के अनुसार अनुकूलित करदेती है, जिससे बेहतर विज़िबिलिटी और रंग सटीकता बनी रहती है। इसकाट्रू ब्राइट 1300 सर्टिफिकेशन वास्तविक ब्राइटनेस लेवल सुनिश्चित करता है।

कलर्स का 'डॉ. आरंभि' X 'मन्नत हर खुशी पाने की' महासंगम: एक सशक्त महिला गठबंधन का प्रदर्शन

कलर्स पर एक धमाकेदार महासंगम लेकर आ रहे हैं, जिसमें भरपूर होगा स्पेक्टेकल, इमोशन और ज़बरदस्त टकराव। इस खास क्रॉसओवर में दिखेगा कि जब एक महिला दूसरी महिला का साथ देती है, तो कहानी में कैसे बड़ा मोड़ आता है। इस एपिसोड में आरंभि (ऐश्वर्या खरे) अपनी दुनिया से आगे बढ़कर मानत (आयेशा सिंह) की उथल-पुथल भरी जिंदगी में कदम रखती हैं जहां महत्वाकांक्षा की कीमत चुकानी पड़ती है, ताकत कई रूपों में छिपी होती है और जीने के लिए हिम्मत चाहिए। सहजता और सहानुभूति से जुड़ी ये दोनों महिलाएं सिर्फ जवाबों के लिए नहीं, बल्कि अपने विश्वासों के लिए लड़ती हैं। सल्ज़ा मैन्शन में विक्रांत (अदनान खान) और याशिका (लीना जुमानी) का भव्य संगीत समारोह शुरू होता है। जो रात संगीत और जश्न से सजी थी, वह जल्द ही भावनाओं के प्रेशर कुकर में बदल जाती है। मानत एक ही मकसद लेकर आती है अर्जु की असली पहचान उजागर करना। वह साहसिक कदम उठाते हुए उसका ड्रिंक स्पाइक करती है, जो या तो उसका राज खोल देगा या पूरी तरह उल्टा पड़ सकता है। जैसे-जैसे गुस्सा बढ़ता है और रिश्तों की वफ़ादारी टूटने लगती है, आरंभि सामने आती है और मानत का मजबूती से साथ देती है। वह हर कदम पर मानत को सपोर्ट करती है और सच को सामने लाने में मदद करती है। आरंभि के साथ होने से दांव और ऊंचे हो जाते हैं और टकराव और भी तीव्र। लेकिन जब हालात चरम पर पहुंचते हैं, क्या अर्जु को आखिरकार अपनी असली पहचान बतानी पड़ेगी? आयेशा सिंह, जो मन्नत हर खुशी पाने की में मानत का किरदार निभा रही हैं, कहती हैं, मानत की यात्रा हमेशा से दृढ़ता की रही है ऐसे सपने देखने की, जिन्हें समाज बार-बार सीमित करने की कोशिश करता है।

ईरान के चक्रव्यूह में घिरा इस्राइलः हिजबुल्ला और हमास के बाद अब यमन से भी हुए मिसाइल हमले

तेलअवीव, एजेंसी। पश्चिम एशिया में जारी युद्ध अब नए और खतरनाक मोड़ पर पहुंच गया है। इस्राइल अब सिर्फ ईरान, हिजबुल्ला और हमास से ही नहीं, बल्कि यमन से भी हमलों का सामना कर रहा है। यमन से पहली बार मिसाइल दागे जाने के बाद हालात और गंभीर हो गए हैं। इससे साफ संकेत मिल रहा है कि इस्राइल अब चारों तरफ से घिरता जा रहा है और प्रधानमंत्री नेतन्याहू के सामने बड़ा संकट खड़ा हो गया है।

इस्राइली सेना के मुताबिक, शनिवार सुबह यमन की ओर से एक मिसाइल दागी गई। इसके बाद बीयर शेबा और परमाणु रिसर्च सेंटर के आसपास सायरन बजने लगे। इससे पहले भी ईरान और हिजबुल्ला लगातार हमले कर रहे थे। यमन के हूती विद्रोही, जो तेहरान समर्थित माने जाते हैं। वो अब इस युद्ध में खुलकर उतरते दिख रहे हैं, हालांकि उन्होंने इस हमले की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है।

हूती विद्रोही लंबे समय से यमन की राजधानी सना पर कब्जा किए हुए हैं। अब उनके प्रवक्ता ने साफ संकेत दिया है कि अगर ईरान पर हमले जारी रहे तो वे सीधे सैन्य कार्रवाई कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि उनकी उंगलियां ट्रिगर पर हैं। इससे यह साफ हो गया है कि युद्ध का दायरा और बढ़ सकता है। इस्राइल पर एक साथ कई दिशाओं से दबाव बढ़ रहा है। ईरान लगातार मिसाइल हमले कर रहा है। हिजबुल्ला लेबनान से हमला कर रहा है। गाजा से हमास सक्रिय है और अब यमन से भी खतरा बढ़ गया है। इससे इस्राइल की सुरक्षा व्यवस्था पर बड़ा दबाव बन गया है।

वेलफेयर फ्रॉड को रोकने के लिए अमेरिकी सरकार ने बनाया टास्क फोर्स

वॉशिंगटन , एजेंसी। ट्रंप सरकार ने वेलफेयर प्रोग्राम में फ्रॉड पर रोक लगाने के लिए एक फेडरल टास्क फोर्स शुरू की है। उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने चेतावनी दी है कि यह समस्या बहुत बड़ी परेशानी बन गई है जिससे टैक्सपेयर का पैसा खत्म हो रहा है। वरिष्ठ अधिकारियों की एक मीटिंग में उपराष्ट्रपति वेंस ने कहा कि सरकार एंटी-फ्रॉड सेफगार्ड्स को फिर से लागू करेगा और फेडरल बेनिफिट प्रोग्राम्स में गलत इस्तेमाल का पता लगाने के लिए क्रॉस-डिपार्टमेंटल कोऑर्डिनेशन लागू करेगा। उन्होंने कहा, 'हमें फ्रॉड के मुद्दे को गंभीरता से लेना होगा। सालों से मौजूद प्रोटेक्शन बंद कर दिए गए थे और उन्हें फिर से लागू करने की जरूरत थी। हम उन एंटी-फ्रॉड प्रोटेक्शन को फिर से चालू करने जा रहे हैं।'

उन्होंने कहा कि इस कोशिश में पूरी सरकार का नजरिया शामिल होगा, जिसमें स्वास्थ्य, हाउसिंग, कृषि और वित्त के कामों को संभालने वाली एजेंसियों को एक साथ लाया जाएगा ताकि गड़बड़ियों की पहचान की जा सके और इंटेलिजेंस शेयर की जा सके। वेंस ने कहा, 'यह सिर्फ अमेरिकी लोगों के पैसे की चोरी नहीं है, यह उन जरूरी सेवाओं की भी चोरी है जिन पर अमेरिकी लोग भरोसा करते हैं।'

उन्होंने मिनेसोटा में मेडिकेड से जुड़ी सेवाओं का उदाहरण देते हुए आरोप लगाया कि धोखाधड़ी की गतिविधियों के कारण ऑटिज्म से प्रभावित बच्चों और उनके परिवारों के लिए निर्धारित लाखों-करोड़ों

डॉलर का फंड दूसरी जगह भेज दिया गया। बता दें, ऑटिज्म एक न्यूरो-डेवलपमेंटल स्थिति है, जिसमें व्यक्ति को सामाजिक बातचीत, सामान्य बातचीत और व्यवहार में चुनौतियां आती हैं। उन्होंने कहा, 'ऐसे परिवार हैं जिन्हें इन सेवाओं की जरूरत है, जो इन्हें नहीं ले पा रहे हैं क्योंकि लोग फ्रॉड स्कीम से अमीर हो रहे हैं।' टास्क फोर्स को लीड कर रहे एक अधिकारी ने कहा कि फ्रॉड ने सरकारी प्रोग्राम्स पर लोगों का भरोसा खत्म कर दिया है और अगर इसे रोका नहीं गया तो इसके बड़े नतीजे होंगे। अधिकारी ने कहा, 'स्कैम उस सामाजिक भरोसे को खत्म कर देता है जिस पर ये प्रोग्राम और हमारा पूरा देश निर्भर करता है।' उन्होंने इस संकट को अस्तित्व का खतरा बताया और इससे निपटने के लिए एक राष्ट्रीय रणनीति बनाने का वादा किया। अधिकारी ने आगे कहा कि टास्क फोर्स अपराधियों पर मुकदमा चलाने और फेडरल बेनिफिट सिस्टम में जवाबदेही सुनिश्चित करने में न्यायिक विभाग की मदद करेगी। व्हाइट हाउस के सीनियर सलाहकार स्टीफन मिलर ने कहा कि कई वेलफेयर प्रोग्राम लिमिटेड वेरिफिकेशन के साथ चलते हैं, जिससे गलत इस्तेमाल बढ़ता है। उन्होंने कहा, 'हमारी सभी प्रणालियां एक उच्च-विश्वास वाली समाज के लिए बनाई गई थीं।' कुछ मामलों में तो लोगों के नामांकन से पहले किसी तरह का सत्यापन भी नहीं किया जाता। उन्होंने आरोप लगाया कि लोग बिना चेक के बेनिफिट पाने के लिए व्यक्तिगत और वित्तीय जानकारी को गलत तरीके से बता सकते हैं। अमेरिकी अधिकारी ने इसे अमेरिकी टैक्सपेयर के डॉलर की बड़ी चोरी बताया। मिलर ने पॉलिटिकल विरोधियों पर एनफोर्समेंट मैकेनिज्म को कमजोर करने और ओवरसाइट की कोशिशों का विरोध करने का भी आरोप लगाया और कहा कि प्रोग्राम डेटा की जांच करने की कोशिशों को रोक दिया गया था। वेंस ने कहा कि टास्क फोर्स को कैबिनेट में सभी का समर्थन है और वह जस्टिस विभाग में नए नेतृत्व के साथ मिलकर एंटी-फ्रॉड एनफोर्समेंट को तेज करने के लिए काम करेगी।

इंडोनेशिया में 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लागू, माता-पिता ने सराहा

जकार्ता, एजेंसी। इंडोनेशिया ने शनिवार से 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर प्रतिबंध लागू करना शुरू कर दिया। नए सरकारी नियम के तहत अब बच्चे यूट्यूब, टिकटॉक, फेसबुक, इंस्टाग्राम, थ्रेड्स, एक्स, बिगो लाइव और रोब्लॉक्स पर अकाउंट नहीं बना पाएंगे। सरकार का कहना है कि इस कदम का उद्देश्य बच्चों को अश्लील फिल्में, साइबर बुलिंग, ऑनलाइन घोटाले और डिजिटल लत जैसी खतरनाक चीजों से सुरक्षित रखना है। इस निर्णय के साथ इंडोनेशिया दक्षिण-पूर्व एशिया का पहला देश बन गया है, जिसने बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग पर सख्त रोक लगाई।

लगभग 70 मिलियन बच्चों पर होगा लागू: इंडोनेशिया के संचार और डिजिटल मामलों की मंत्री मेट्या हफिद ने मार्च में इस नियम की घोषणा करते हुए बताया कि यह लगभग 70 मिलियन बच्चों पर लागू होगा। उन्होंने

यह भी स्वीकार किया कि नियम का पालन कराना आसान नहीं होगा, क्योंकि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स को नियमों के अनुरूप बनाना और 16 साल से कम उम्र के खातों की रिपोर्ट कराना चुनौतीपूर्ण है। मंत्री हफिद ने कहा यह निश्चित रूप से कठिन कार्य है, लेकिन हमें अपने बच्चों को बचाने के लिए कदम उठाने होंगे। इसे लागू करना आसान नहीं, लेकिन हमें इसे पूरा करना ही होगा।

माता-पिता ने सराहा: 13 वर्षीय मौरा मुन्थे, जो रोजाना लगभग चार घंटे सोशल मीडिया और ऑनलाइन गेम्स पर बिताती हैं, ने नए नियम के बारे में कहा कि उनकी राय '50-50' है, लेकिन वे ज्यादातर इस निर्णय के पक्ष में हैं। उनकी माँ लेनी सिनुराया ने कहा कि सोशल मीडिया के चलते माता-पिता ने अपने बच्चों पर नियंत्रण खो दिया है और यह कदम बच्चों की सुरक्षा के लिए सही है।

सिनुराया ने बताया, 'आजकल जब हम बच्चों को किसी रेस्तरां में देखते हैं, उनके हाथ में हमेशा फोन होता है। वे तब तक नहीं खाते जब तक उन्हें फोन नहीं दिया जाता, और अगर नहीं दिया तो वे हंगामा करते हैं।' मील टाइम का मतलब है।

वॉशिंगटन में उड़ानों पर लगा ब्रेक, एयर ट्रैफिक सेंटर में रसायनिक दुर्गंध से ठप हुआ आसमान

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की राजधानी वॉशिंगटन और आसपास के इलाकों में उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब एयर ट्रैफिक कंट्रोल सेंटर में तेज केमिकल जैसी गंध आने के कारण कई बड़े एयरपोर्ट्स पर उड़ानों को रोकना पड़ा। अचानक लिए गए इस फैसले से यात्रियों को भारी परेशानी हुई और पूरे इलाके में हवाई सेवाएं कुछ समय के लिए ठप हो गईं। यह घटना सुरक्षा को लेकर बड़े सवाल भी खड़े कर रही है। जानकारी के मुताबिक, संघीय अधिकारियों ने बताया कि पोटोमैक ट्रैकन सेंटर में तेज रसायनिक दुर्गंध महसूस की गई, जिसके बाद तुरंत कार्रवाई करते हुए कई एयरपोर्ट्स पर ग्लाउंड ऑपरेशन रोक दिए गए। जिन एयरपोर्ट्स पर असर पड़ा, उनमें रोनाल्ड रीगन वॉशिंगटन नेशनल एयरपोर्ट, वॉशिंगटन डलेस इंटरनेशनल एयरपोर्ट, बाल्टीमोर-वॉशिंगटन इंटरनेशनल एयरपोर्ट, शार्लोट्सविल-अलबेमार्ले एयरपोर्ट और रिचमंड इंटरनेशनल एयरपोर्ट शामिल हैं। यह सेंटर इन सभी क्षेत्रों की हवाई यातायात व्यवस्था संभालता है। पोटोमैक ट्रैकन एक टर्मिनल रडार अप्रोच कंट्रोल सुविधा है, जो वॉशिंगटन और आसपास के कई बड़े एयरपोर्ट्स की उड़ानों को कंट्रोल करती है। यहां से तय होता है कि कौन सी फ्लाइट कब लैंड करेगी और कब उड़ान भरेगी। ऐसे में यहां किसी भी तरह की तकनीकी या सुरक्षा समस्या का सीधा असर पूरे क्षेत्र की हवाई सेवाओं पर पड़ता है। फिलहाल इस गंध के पीछे की सटीक वजह साफ नहीं हो पाई है। हालांकि, अधिकारियों ने एहतियात के तौर पर तुरंत उड़ानों को रोक दिया। बाद में जांच और सुरक्षा जांच के बाद हालात सामान्य होने लगे। फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन की प्रवक्ता क्रिस्टन एल्सोप ने बताया कि कंट्रोलर धीरे-धीरे काम पर लौट रहे हैं और उड़ानें जल्द सामान्य हो जाएंगी। यह इस महीने दूसरी बार है जब इसी तरह की रसायनिक दुर्गंध के कारण उड़ानों को रोकना पड़ा है। इससे पहले भी करीब एक घंटे के लिए उड़ानें बंद करनी पड़ी थीं।

रेप के बाद आत्महत्या की कोशिश की थी, तीन साल से व्हीलचेयर पर थी

स्पेन में पिता से कानूनी लड़ाई के बाद इच्छामृत्यु मिली

बार्सिलोना, एजेंसी। स्पेन में 25 साल की नोएलिया कास्तिलो ने लंबी कानूनी लड़ाई के बाद इच्छामृत्यु के जरिए गुरुवार को अपना जीवन खत्म कर लिया। नोएलिया को इच्छामृत्यु के लिए अपने पिता से भी कानूनी लड़ाई लड़ना पड़ी क्योंकि वे इसके विरोध में थे। बार्सिलोना की रहने वाली नोएलिया का 2022 में एक फैसिलिटी सेंटर में 3 युवकों ने रेप किया था। इसके बाद नोएलिया ने आत्महत्या की कोशिश की और पांचवीं मंजिल से छलांग लगा दी। हालांकि वह इस घटना में बच गईं, लेकिन उन्हें रीढ़ की हड्डी में गंभीर चोट लगी, जिसके कारण वह कमर के नीचे से लकवाग्रस्त हो गईं। इसके बाद से वह लगातार शारीरिक दर्द और मानसिक तनाव से जूझ रही थीं। नोएलिया ने 2024 में इच्छामृत्यु के लिए आवेदन किया था, जिसे कैटेलोनिया सरकार ने मंजूरी भी दे दी थी। लेकिन आखिरी समय में उसके पिता ने अदालत में आपत्ति दर्ज कराई और प्रक्रिया रुकवा दी थी।

फोस्टर होम में कई बार यौन शोषण हुआ नोएलिया बचपन में अपने माता-पिता के साथ ठीक से नहीं रह पा रही थीं। उसे मानसिक दिक्कतें थीं और उनके माता-पिता का तलाक भी हो गया था। परिवार में समस्याएं होने की वजह से सरकार ने उन्हें 13 साल की उम्र में एक देखभाल केंद्र (फोस्टर होम) में रख दिया, ताकि उनकी देखभाल हो सके। इसके बाद वह उसी देखभाल केंद्र में रहने लगीं, जहां उन्होंने कई बार दुर्व्यवहार होने का आरोप लगाया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, वहां उनके साथ कई बार यौन शोषण हुआ और आखिरी बार 2022 में तीन लड़कों ने उनके साथ गैंगरेप किया।

इच्छामृत्यु की इजाजत मिली, पिता ने विरोध किया: रेप की घटना के बाद नोएलिया की मानसिक हालत और बिगड़ गई। इससे परेशान होकर उसने पांचवीं मंजिल से छलांग

लगा दी, लेकिन वह बच गई। इस कोशिश के बाद वह हमेशा दर्द में रहने लगीं और व्हीलचेयर पर आ गईं। करीब 18 महीने बाद उन्होंने 2021 में लागू हुए स्पेन के इच्छामृत्यु कानून के तहत अपनी जिंदगी खत्म करने की अनुमति हासिल की। लेकिन इच्छामृत्यु पाने की उनकी कोशिश का उनके पिता और एक अल्ट्रा कंसरवेटिव ग्रुप 'क्रिश्चियन लॉयर्स' ने विरोध किया। उनका कहना था कि नोएलिया की मानसिक हालत ऐसी नहीं है कि वह अपनी जिंदगी खत्म करने का सही फैसला ले सकें।

डेढ़ साल तक अदालत में चलता रहा केस नोएलिया की इच्छामृत्यु का मामला कोर्ट में चला गया और कानूनी लड़ाई शुरू हो गई। करीब डेढ़ साल तक यह केस अलग-अलग अदालतों में चलता रहा। इस दौरान डॉक्टरों और मेडिकल विशेषज्ञों ने भी अपनी राय दी। उन्होंने बताया कि नोएलिया की हालत बेहद गंभीर है, उन्हें लगातार तेज दर्द रहता है और उनके ठीक होने की संभावना बहुत कम है। सरकार से जुड़ी एजेंसी ने भी उनकी मांग को सही माना और इच्छामृत्यु की अनुमति दे दी। इसके बावजूद उनके पिता ने फैसले को चुनौती दी, जिससे मामला आगे बढ़ता गया।

आखिरकार यह मामला यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय तक पहुंचा। वहां यह देखा गया कि क्या नोएलिया मानसिक रूप से अपने फैसले लेने में सक्षम हैं, क्या उन पर किसी तरह का दबाव है और क्या उनकी मांग कानून के तहत सही है। अदालत ने सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद यह माना कि नोएलिया को अपने जीवन के बारे में फैसला लेने का अधिकार है। इस फैसले के बाद उनकी इच्छामृत्यु का रास्ता पूरी तरह साफ हो गया और तय प्रक्रिया के तहत इसे अंजाम दिया गया।

नोएलिया की इच्छानुसार उन्हें 'असिस्टेड डेथ' दी गई। इच्छामृत्यु की प्रक्रिया में तीन इंजेक्शन दिए गए। पहले दो से गहरी बेहोशी लाई गई और तीसरे इंजेक्शन से दिल की धड़कन रुक गई। नोएलिया ने कहा था कि वह अपनी मौत के समय अकेली रहना चाहती हैं और नहीं चाहती थीं कि कोई उन्हें अंतिम समय में देखे। स्पेन के स्वास्थ्य मंत्रालय के ताजा आंकड़ों के अनुसार, जून 2021 (जब यह कानून लागू हुआ) से लेकर 2024 के अंत तक 1,123 लोगों ने असिस्टेड डेथ ली है। नोएलिया का मामला इसलिए भी खास माना जा रहा है क्योंकि पहली बार किसी व्यक्ति के इच्छामृत्यु के अधिकार को लेकर इतनी लंबी और बड़ी कानूनी लड़ाई देखने को मिली। मौत से कुछ दिन पहले रिकॉर्ड किए गए एक टीवी इंटरव्यू में नोएलिया ने अपने फैसले का बचाव करते हुए कहा कि यह उसका अपना फैसला है।

स्पेन में इच्छामृत्यु का अधिकार केवल उन वयस्क लोगों को दिया जाता है, जो 'गंभीर और लाइलाज बीमारी' या 'गंभीर, पुरानी और अक्षम करने वाली स्थिति' से जूझ रहे हों। इसके साथ यह भी जरूरी है कि आवेदन करते समय व्यक्ति 'सचेत और सक्षम' हो, यानी वह खुद फैसला लेने की स्थिति में हो। कानून के अनुसार 'गंभीर और लाइलाज बीमारी' वह मानी जाती है, जिसमें मरीज को लगातार और असहनीय शारीरिक या मानसिक दर्द हो, जिसका कोई प्रभावी इलाज संभव न हो। साथ ही यह भी देखा जाता है कि बीमारी के कारण व्यक्ति की हालत लगातार बिगड़ रही हो और उसके जीवन की अवधि सीमित हो।

स्टोक्स मई के बाद कर सकेंगे वापसी, ट्रेनिंग सेशन में हुए घायल

नई दिल्ली, एजेंसी। इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने पुष्टि की है कि गाल की हड्डी में चोट से जुड़ी दिक्कतों के कारण प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में उनकी वापसी मई तक टल गई है। 34 वर्षीय ऑलराउंडर जिन्हें फरवरी की शुरुआत में डरहम अकादमी के खिलाड़ियों के साथ एक ट्रेनिंग सेशन के दौरान गेंद लग गई थी, ने एक हफ्ते बाद टूटी हुई गाल की हड्डी को ठीक करवाने के लिए सर्जरी करवाई थी। स्टोक्स ने असल में इस शुक्रवार को

केंट के खिलाफ डरहम के काउंटी चैंपियनशिप के शुरुआती मैच में वापसी करने की योजना बनाई थी। हालांकि क्लब अभी भी विशेषज्ञों से अंतिम मेडिकल मंजूरी का इंतजार कर रहा है। डरहम के मुख्य कोच रयान कैंपबेल ने संकेत दिया कि स्टोक्स शायद 8 मई को वॉर्सेस्टरशायर के खिलाफ और फिर 15 मई को बेकेनहम में केंट के खिलाफ होने वाले मैचों तक नहीं खेल पाएंगे। अगर स्टोक्स तब तक वापसी नहीं कर पाते हैं, तो ये मैच न्यूजीलैंड के खिलाफ इंग्लैंड के गर्मियों के पहले टेस्ट से पहले उनके लिए एकमात्र रेड-बॉल मैच हो सकते हैं; यह टेस्ट 4 जून से शुरू होगा। कैंपबेल ने इस चोट को एक 'बाल-बाल बचने' वाला मामला बताया। उन्होंने कहा, '(यह घटना) बहुत भयानक हो सकती थी। जितना आप सोचते हैं, उससे कहीं ज्यादा बुरा। बस कुछ सेंटीमीटर का फर्क, अगर गेंद थोड़ी अलग तरह से उनकी आंख पर लगती, तो नतीजा कुछ और हो सकता था। गेंद बहुत जोर से लगी थी। हम बस खुशकिस्मत हैं कि वह इससे बच निकले।' इंग्लैंड के निराशाजनक एशेज अभियान के बाद से स्टोक्स ने कोई मैच नहीं खेला है; इस अभियान के दौरान उन्हें एडक्टर (जांघ की मांसपेशी) में चोट लग गई थी, जो उन्हें सिडनी में खेले गए टेस्ट मैच में लगी थी। सीरीज हारने के बावजूद स्टोक्स इंग्लैंड के कप्तान बने हुए हैं और कोच ब्रेंडन मैकुलम तथा मैनेजिंग डायरेक्टर रॉब की दोनों ही अपने-अपने पदों पर बने हुए हैं।

वांगसू ने 'खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स' में जीता गोल्ड

रायपुर, एजेंसी। अरुणाचल प्रदेश की 21 साल की वेटलिफ्टर अनाई वांगसू को पहले 'खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स' 2026 में हिस्सा लेने से कुछ दिन पहले पेट की पुरानी समस्या के चलते अस्पताल में भर्ती होना पड़ा था। उन्हें कमजोरी दूर

करने और ताकत पाने के लिए आईवी फ्लूइड्स (नसों के जरिए तरल पदार्थ) दिए गए। हालांकि, बीमारी भी उनका हौसला नहीं तोड़ सकी। छत्तीसगढ़ में महिलाओं के 58 किलो वर्ग में अनाई ने गोल्ड मेडल जीता है। अनाई वांगसू 2019 से पेट की समस्या से जूझ रही हैं, जिसमें अचानक कमजोरी, थकान और डिहाइड्रेशन हो जाता है। वेटलिफ्टिंग जैसे खेल में ताकत और संतुलन बहुत जरूरी होते हैं। 'साई मीडिया' से बातचीत में अनाई ने कहा, 'मैंने पहले ब्रॉन्ज और सिल्वर मेडल जीते थे। परिवार के लोग हर बार पूछते थे कि मैं गोल्ड कब जीतूंगी। अब मैं गोल्ड जीतकर खुश हूं और परिवार भी बहुत खुश है।' अनाई ने पहले यूथ नेशनल गेम्स में दो ब्रॉन्ज मेडल और अलग-अलग 'खेलो इंडिया गेम्स' में सिल्वर मेडल जीते थे, लेकिन गोल्ड हमेशा उनसे दूर रहा। पिछले साल राजस्थान में आयोजित 'ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी नेशनल गेम्स' में वे सिर्फ एक लिफ्ट से गोल्ड से चूक गई थीं। उस पल का दर्द आज भी उनके जहन में ताजा है। उन्होंने उस पल को याद करते हुए कहा, 'उस दिन मैं बहुत रोई थी। मुझे ऐसा लगा था कि मेरी सारी मेहनत बेकार चली गई।

कोहली ने दमदार पारी पर दिया बयान

120% देना चाहता हूं

बंगलूरू, एजेंसी। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने आईपीएल 2026 में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ नाबाद अर्धशतक लगाकर टीम को जीत दिलाई। कोहली ने 38 गेंदों पर पांच चौकों और पांच छक्कों की मदद से नाबाद 69 रन बनाए। कोहली ने इस पारी के बाद कहा कि वह टीम के लिए 120 प्रतिशत देना चाहते हैं और बिना तैयारी के खेलने नहीं उतरते हैं।

लय में हैं कोहली

कोहली अब भारत के लिए सिर्फ वनडे प्रारूप में ही खेलते हैं और टी20 में वह सिर्फ आईपीएल ही खेल रहे हैं। अपनी पारी को लेकर कोहली ने कहा, वापस यहां आकर अच्छा लग रहा है। आखिरी मैच मैने पिछले साल आईपीएल फाइनल खेला था, लेकिन हाल ही में वनडे सीरीज में जिस तरह से बल्लेबाजी की, उससे मुझे लय हासिल करने में मदद मिली। मैं वह शॉट्स नहीं खेल रहा था जो आम तौर पर नहीं खेलता। मुझे पता है कि मैं लय में हूं और मैने फिटनेस पर भी काफी मेहनत की है तो प्रदर्शन अच्छा ही रहेगा। हमारे पास अच्छी शुरुआत का मौका था और हमने वही किया।

ब्रेक से मिला फायदा

सिर्फ एक ही प्रारूप खेलने के बारे में पूछने पर कोहली ने कहा, पिछले 15 साल से जिस तरह का कार्यक्रम रहा है और हमने जितनी क्रिकेट खेली है, मेरे लिए तैयारी की कमी के बजाय जरूरत से ज्यादा खेलने की थकान का जोखिम अधिक रहा है। इसलिए इन ब्रेक से तरोताजा होकर लौटने में काफी मदद मिली। जब भी मैं खेलने आता हूं तो 120 प्रतिशत देने की कोशिश रहती है। कभी तैयारी के बिना नहीं आता। अतिरिक्त विश्राम से मुझे मानसिक रूप से तरोताजा होने में मदद मिली। अगर आप शारीरिक और मानसिक रूप से तरोताजा होकर खेलते हैं तो टीम के लिए योगदान दे सकते हैं और यही हर खिलाड़ी करना चाहता है।

देवदत्त पडिक्कल की 26 गेंद में 61 रन की पारी को शानदार बताते हुए कोहली ने कहा, मैं पावरप्ले में आक्रामक खेलना चाहता था लेकिन जब मैने पडिक्कल को इस तरह खेलते देखा तो उसे अधिक स्ट्राइक देने की कोशिश की। उसने एक बेहतरीन पारी खेलकर मैच सनराइजर्स की जद से बाहर कर दिया।

कोहली का बेस्ट आना अभी बाकी

● अंबाती रायडू ने दी विराट को बड़ी सलाह

नई दिल्ली, एजेंसी। आईपीएल 2026 के ओपनिंग मैच में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की ओर से खेलते हुए विराट कोहली ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ शानदार बल्लेबाजी की। 202 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए कोहली ने नाबाद 69 रन की पारी खेलकर टीम को आसान जीत दिलाई। इस पारी के बाद एक बार फिर उनकी फॉर्म और फिटनेस को लेकर चर्चा तेज हो गई है। इससे पहले भी वह दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे सीरीज में कई शतक लगा चुके हैं।

पूर्व भारतीय क्रिकेटर अंबाती रायडू ने विराट कोहली को लेकर बड़ा बयान दिया है। रायडू का मानना है कि कोहली के अंदर अभी भी 5 से 6 साल का इंटरनेशनल क्रिकेट बाकी है। उन्होंने कहा कि कोहली की फिटनेस आज भी शानदार है और वह अभी खत्म नहीं हुए हैं। रायडू के अनुसार कोहली का बेस्ट अभी आना बाकी है और आईपीएलमें जो दिख रहा है वह सिर्फ एक ट्रेलर है।

टेस्ट क्रिकेट में वापसी और कप्तानी की सलाह

अंबाती रायडू ने यह भी कहा कि विराट कोहली को टेस्ट क्रिकेट में वापसी करनी चाहिए। कोहली को फिर से टेस्ट कप्तान बनाना चाहिए और उनकी जगह मौजूदा कप्तान को हटाने पर भी विचार करना चाहिए। रायडू का मानना है कि कप्तानी का नया चैलेंज कोहली को फिर से टेस्ट क्रिकेट खेलने के लिए प्रेरित कर सकता है।विराट कोहली ने अपने टेस्ट करियर में 123 मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 9,230 रन बनाए, जिसमें 30 शतक और 31 अर्धशतक शामिल हैं। वह टेस्ट क्रिकेट में 10,000 रन के आंकड़े से सिर्फ 770 रन दूर रह गए थे। उन्होंने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के बाद टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया था, जिससे फैंस काफी हैरान रह गए थे।

अरिना ने जीता मियामी ओपन खिताब

विश्व के चौथे नंबर की खिलाड़ी कोको गॉफ को हराया

मियामी, एजेंसी। विश्व की नंबर एक महिला टेनिस खिलाड़ी अरिना सबालेंका ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मियामी ओपन का खिताब बचा लिया है। सबालेंका ने फाइनल में कोको गॉफ को हराया।अरिना सबालेंका ने मियामी ओपन के खिताब को अपने नाम किया। उन्होंने फाइनल मुकाबले में विश्व के चौथे नंबर की खिलाड़ी कोको गॉफ को 6-2, 4-6, 6-3 से हराया। इगा स्वियातेक के बाद सबालेंका 'सनशाइन डबल' पूरा करने वाली पहली खिलाड़ी बन गई हैं। यह उनका लगातार दूसरा मियामी ओपन खिताब है। इससे पहले एश्ले बार्टी (2019 और 2021) और सेरेना विलियम्स (2013 से 2015) ही लगातार यह टूर्नामेंट जीत पाई थीं। इस तरह सबालेंका ने दिग्गज खिलाड़ियों की सूची में अपनी जगह बना ली है। सबालेंका एक ही सीजन में इंडियन वेल्स और मियामी में सनशाइन डबल जीतने वाली पांचवीं महिला खिलाड़ी बन गई हैं। सबालेंका से पहले स्टेफी ग्राफ, किम क्लिस्टर्स, विक्टोरिया अजारेंका और इगा स्वियाटेक यह कारनामा कर चुकी हैं। सबालेंका 2000 के बाद से चौथी खिलाड़ी हैं जो साल के अपने पहले चार टूर्नामेंट (मार्टिना हिंगिस, 2001, सेरेना विलियम्स, 2003, और विक्टोरिया अजारेंका, 2012) के फाइनल में पहुंची हैं। ये सभी टूर्नामेंट हार्ड कोर्ट पर हुए हैं। उन्होंने इनमें से तीन जीते, जिसमें ब्रिस्बेन और सनशाइन डबल शामिल हैं। खिताब जीतने के बाद सबालेंका ने कहा, यह खिताब काफी खास है। मेरा लक्ष्य हमेशा इतिहास में अपना नाम दर्ज कराना रहा है और मैंने बस वही किया। यह सुनने में बहुत अजीब लगता है। मुझे नहीं पता कि मैं यह कैसे कर पाई, लेकिन अभी मुझे बहुत गर्व है। बेशक, इस खूबसूरत ट्रॉफी से बहुत खुश हूं।

नंबर पर स्थिति मजबूत की

यह जीत उनके करियर का 24वां डब्ल्यूटीए एकल खिताब और कुल मिलाकर 30वां खिताब है जिसमें छह युगल खिताब भी शामिल हैं। इनमें चार ग्रैंडस्लैम एकल खिताब, दो डबल्स, 11 डब्ल्यूटीए 1000 सिंगल्स टाइटल और दो डबल्स खिताब शामिल हैं। सबालेंका लंबे समय से दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी बनी हुई हैं और अब उनकी यह स्थिति और मजबूत हो गई है। सबालेंका ने अब तक विश्व नंबर एक खिलाड़ी के रूप में कुल 83 हफ्ते बिताए हैं। इसमें उनका मौजूदा शानदार दौर भी शामिल है जो लगातार 75 हफ्तों तक पहुंच चुका है। सोमवार को वह लगातार 76वें हफ्ते के लिए नंबर एक बनी रहेंगी। इसके साथ ही वह इगा स्वियातेक के सबसे लंबे नंबर एक रहने के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ देंगी। हालांकि, उनसे आगे अभी एश्ले बार्टी हैं, जिन्होंने सितंबर 2019 से मार्च 2022 तक लगातार 114 हफ्तों तक नंबर 1 की कुर्सी संभाली थी।

मेजर लीग क्रिकेट में खेलने वाले पहले पूर्व भारतीय खिलाड़ी होंगे अश्विन

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट और आईपीएल को अलविदा कहते समय दिग्गज ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने दुनिया के अन्य लीग में खेलने का अपना विकल्प खुला रखा था। वह ऑस्ट्रेलिया की बिग बैश लीग (बीबीएल) में चोट की वजह से नहीं खेल सके थे, लेकिन अब वह अमेरिका में खेली जाने वाली मेजर लीग क्रिकेट (एसएलसी) में खेलने वाले पहले भारतीय बनेंगे। रविचंद्रन अश्विन ने मेजर लीग क्रिकेट 2026 के लिए सैन फ्रांसिस्को यूनिकॉर्न्स के साथ करार किया है। सैन फ्रांसिस्को यूनिकॉर्न्स के साथ करार के बाद अश्विन ने कहा, एमएलसी ने हाल के सीजन में खुद को एक बेहतरीन लीग के रूप में स्थापित किया है। लीग में विश्व स्तरीय खिलाड़ी आते हैं। इससे अमेरिका के घरेलू क्रिकेट प्रतिभाओं को पहचान मिलती है। सैन फ्रांसिस्को यूनिकॉर्न्स का हिस्सा बनने का मौका ऐसा था जिसे मैं हाथ से जाने नहीं दे सकता था। मेजर लीग क्रिकेट में खेलने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी के तौर पर यह जिम्मेदारी उठाना एक बड़ी बात है, जिसे मैं पूरी तरह से स्वीकार करता हूं। मेरा पूरा ध्यान इस फ्रेंचाइजी को मैच जिताने और उसकी पहली चैंपियनशिप जीतने में मदद करने पर है।सैन फ्रांसिस्को यूनिकॉर्न्स के मुख्य कोच कैमरन व्हाइट ने कहा, हम अश्विन जैसे खिलाड़ी का स्वागत करते हुए बेहद उत्साहित हैं। जब आप मैच जिताने वाले खिलाड़ियों और क्रिकेट की समझ की बात करते हैं तो दुनिया भर में उनका नाम इस सूची में सबसे ऊपर आता है। पहले भारतीय खिलाड़ी को टीम में शामिल करना हमारी फ्रेंचाइजी और पूरे एमएलसी के लिए एक बहुत बड़ा पल है, लेकिन सबसे पहले और सबसे जरूरी बात यह है कि वह हमें मैच जिताने में मदद करने के लिए टीम में शामिल हो रहे हैं।

ईशान की शानदार बल्लेबाजी, बतौर डेब्यू कप्तान किया कमाल

बेंगलुरु, एजेंसी। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) और सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) के बीच आईपीएल 2026 का पहला मुकाबला शनिवार को एम. चिन्नास्वामी क्रिकेट स्टेडियम में खेला जा रहा है। ईशान किशन ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 38 गेंदों में 80 रनों की दमदार पारी खेली। ईशान बतौर कप्तान डेब्यू करते हुए सनराइजर्स हैदराबाद की ओर से सबसे बड़ी पारी खेलने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। ईशान ने मनीष पांडे के रिकॉर्ड को तोड़ा है। मनीष ने सनराइजर्स हैदराबाद की ओर से कप्तान के तौर पर अपने डेब्यू मुकाबले में साल 2021 में 41 गेंदों पर 69 रनों की नाबाद पारी खेली। वहीं, डेविड वॉर्नर ने 2015 में 42 गेंदों में 53 रन बनाए थे। हालांकि, ईशान इन दोनों ही बल्लेबाजों से आगे निकल गए हैं। नंबर तीन पर बल्लेबाजी करने उतरे ईशान ने 210 के स्ट्राइक रेट से खेलते हुए 80 रनों की अपनी पारी में 8 चौके और 5 गगनचुंबी छक्के लगाए। अभिषेक शर्मा और ट्रेविस हेड के सस्ते में पवेलियन लौटने के बाद ईशान ने एसआरएच की लड़खड़ाती हुई पारी को बखूबी अंदाज में संभाला। ईशान ने हेनरिक क्लासन के साथ मिलकर 97 रनों की अहम साझेदारी निभाई। बाएं हाथ के बल्लेबाज के आगे आरसीबी का गेंदबाजी अटैक पूरी तरह से बेबस नजर आया। ईशान ने आईपीएल में 3 हजार रन भी पूरे कर लिए हैं। गेंदों के लिहाज से ईशान सबसे तेज 3 हजार रन पूरे करने वाले छठे बल्लेबाज बन गए हैं। उन्होंने इस मामले में केएल राहुल को पीछे छोड़ दिया है। राहुल ने आईपीएल में 3 हजार रन 2203 गेंदों में पूरे किए थे। वहीं, ईशान ने यह मुकाम 2,180 गेंदें खेलने के बाद पूरा किया है। ईशान के अलावा क्लासन ने 22 गेंदों में 31 रनों की पारी खेली। हालांकि, अभिषेक शर्मा और ट्रेविस हेड का बल्ला आईपीएल 2026 के पहले मैच में पूरी तरह से खामोश रहा। अभिषेक संघर्ष करते हुए नजर आए और वह 8 गेंदों में 7 रन ही बना सके। वहीं, हेड 9 गेंदों का सामना करने के बाद 11 रन बनाकर आउट हुए। वहीं, नीतीश कुमार रेड्डी ने भी अपने प्रदर्शन से निराश किया और वह एक रन ही बना सके। अंतिम ओवरों में अनिकेत वर्मा ने बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए महज 18 गेंदों में 43 रनों की दमदार पारी खेली, जिसके दम पर सनराइजर्स हैदराबाद की टीम 20 ओवर में 9 विकेट गंवाकर स्कोरबोर्ड पर 201 रन लगाने में सफल रही।

माओवाद देश के लिए मवाद था – संतोष पांडेय

नक्सलवाद अब इतिहास बन कर रह जाएगा – संतोष पांडेय

रायपुर/मूक पत्रिका

भाजपा मुख्य प्रवक्ता एवं सांसद संतोष पांडेय ने लोकसभा सदन में चर्चा के दौरान छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद की पूर्ण समाप्ति को लेकर कहा कि सदन में देश की आंतरिक सुरक्षा के सबसे महत्वपूर्ण विषय वामपंथी उग्रवाद पर सरकार के पक्ष में बोलते हुए कहा कि हम सभी जानते हैं कि किस प्रकार से भ्रमजाल पैदा किया गया और सशस्त्र आंदोलन के नाम पर लंबे समय तक छत्तीसगढ़ के बड़े हिस्से को नक्सलवाद ने जकड़ रखा गया था। अब नक्सलवाद इतिहास बन कर रह जाएगा। आज नक्सलवाद अपनी अंतिम सांसे गिन रहा है। दशकों तक लाल आतंक का साया हमारे आदिवासी क्षेत्रों पर मंडराता रहा है और आज जब 31 मार्च 2026 तक भारत को हथियारबंध नक्सलवाद से मुक्त करेंगे तो यह केवल एक सरकारी लक्ष्य नहीं है बल्कि 140 करोड़ भारतीयों की साझा प्रतिज्ञा है और यह प्रतिज्ञा जब नेतृत्व लेता है तो पूरा देश उन पर विश्वास करते हुए उनके पीछे खड़ा होता है। यह दृढ़ इच्छा शक्ति के संकल्प का प्रभाव है। सांसद श्री पांडेय ने कहा कि भारत के इतिहास में जब आंतरिक सुरक्षा के ऊपर चर्चा की जाएगी, शोध किया जाएगा तो देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी और देश के गृहमंत्री अमित शाह का

नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। जिस तरह देश के एकीकरण के लिए जब रियासतों का विलयीकरण हुआ था तब देश के पूर्व गृह मंत्री लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल के फौलादी नेतृत्व और इतिहास को हम सब स्मरण करते हैं और आज जब छत्तीसगढ़ के बस्तर, बीजापुर, सुकमा, दंतेवाड़ा, कोंडागांव, कांकेर, नारायणपुर, भानुप्रतापपुर, मानपुर, मोहला, मदनवाड़ा, बगड़गट्टा, रेंगाखार, गरियाबंद, संपूर्ण छत्तीसगढ़ की ओर से मैं अपने नेतृत्व के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने खड़ा हुआ हूं। आगे उन्होंने कहा कि देश के अंगभूत हम सभी घटक हैं किंतु हमारा यह नेतृत्व और उस कर्तव्य को आपने निभाया। बस्तर जिसे दण्डकारण्य कहते हैं पूरे छत्तीसगढ़ को आपने नक्सल मुक्त किया है इस पर हम छत्तीसगढ़ वासी उऋण नहीं हो सकते। इस ऋण को हम कभी नहीं चुका सकते। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एक टाईमलाइन के तहत एक लक्ष्य लेकर, एक टारगेट निर्धारित के नक्सलवाद का समूल नाश किया है। उन्होंने कहा कि 40 साल तक माओवाद नहीं यह मवाद था जिसने पूरे छत्तीसगढ़ को रेड कॉरिडोर बना रखा था। ऐसे मवाद को केन्द्र सरकार ने ऑपरेशन करके निकालने का काम किया है। सांसद श्री पांडेय ने कहा कि छत्तीसगढ़ में कई वीभत्स घटनाएं विभीषिका घटित हुई जिसे छत्तीसगढ़ की जनता जानती है और जिसके ऊपर गुजारा है वह जानता है। माओवादियों ने कई बड़े-बड़े हमले किए 2010 में 76 सीआरपीएफ के जवान शहीद हुए हो गए, किंतु दिल्ली के जेएनयू में जश्न मनाया गया। वह कौन लोग हैं जो बस्तर में हमारे सीआरपीएफके सैनिक, जवान, प्रहरी शहीद होते हो रहे थे तो जश्न मनाते थे। अब यह देश की जनता जान चुकी है। उन्होंने घटना का जिक्र करते हुए कहा कि हिड़मा से लेकर पापाराव तक 2013 में झीरम घाटी में नरसंहार हुआ था उसका भी गुनहगार हिड़मा ही था जिसने नेताओं को मौत के घाट उतार दिया। 2021 में बस्तर-सुकमा के बीच में 22 जवान शहीद हुए थे और मेरे क्षेत्र के आठ विधानसभा में से सात विधानसभा नक्सलवाद से प्रभावित रहा हैं। मदनवाड़ा में 29 जवान के साथ एसपी विनोद चौबे शहीद हुए थे। जिन परिवारों के साथ घटना घटित हुई उसका दर्द वही जान सकता है। सांसद श्री पांडेय ने कहा कि जितनी हत्याएं देश की सीमाओं में नहीं हुई उतनी हत्या छत्तीसगढ़ में हुई है। इस दर्द को मिटाने का काम प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार ने किया है। इस संवेदना को समझ करके केन्द्र सरकार आगे बढ़ रही है। नक्सलियों के समूल नाश में लगे सीआरपीएफ के कोबरा फोर्स, आरटीबीपी, बीएसएफ, एसएसबी, डीआईजी, डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड, एसटीएफ, छत्तीसगढ़ आर्म्ड फोर्स, बस्तर फाइटर, झारखंड जैगुवार ऐसे लगभग 18 से 19 फोर्सेस ने अपना सर्वस्व अर्पण किया। उन्होंने सदन में बताया कि आज लोकसभा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को वामपंथी उग्रवाद (नक्सलवाद) से मुक्त करने हेतु केंद्र सरकार के ठोस प्रयासों पर चर्चा की शुरुआत किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व और गृहमंत्री अमित शाह जी के सशक्त रणनीति के मार्गदर्शन में देश मे नक्सलवाद के खिलाफ निर्णायक लड़ाई तेज़ी से आगे बढ़ रही है। मार्च 2026 तक छत्तीसगढ़ को नक्सलवाद मुक्त बनाने का लक्ष्य यह केवल संकल्प नहीं, बल्कि केंद्र सरकार, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, सुरक्षा बलों और जनता के सामूहिक प्रयासों का परिणाम बनने की दिशा में एक मजबूत कदम है। छत्तीसगढ़ सरकार, पुलिस बल और हमारे वीर जवानों का अदम्य साहस, समर्पण और बलिदान इस अभियान की सबसे बड़ी शक्ति है। सांसद पांडेय ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह एवं मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के संयुक्त प्रयासों के लिए आभार व्यक्त किया।

कुंवरगढ़ के गौरवशाली इतिहास को मिलेगी नई पहचान, 31 मार्च से शुरू होगा तीन दिवसीय 'कुँवरगढ़ महोत्सव'

धरसीवां /मूक पत्रिका

ऐतिहासिक नगरी कुँवरगढ़ के गौरवशाली इतिहास के पुनरुद्धार की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए 31 मार्च से 2 अप्रैल तक तीन दिवसीय 'कुँवरगढ़ महोत्सव' का भव्य आयोजन किया जा रहा है। क्षेत्रीय विधायक अनुज शर्मा की विशेष पहल और दूरदर्शी सोच के परिणामस्वरूप नगर एवं क्षेत्र के इतिहास में पहली बार इस महोत्सव का आयोजन होने जा रहा है।महोत्सव का विधिवत शुभारंभ प्रदेश के मुख्यमंत्री ड्ढद्वह्यद्धठ्ठह्व ष्ठद्गश स्ड्डब्ब के कर-कमलों द्वारा किया जाएगा। यह आयोजन न केवल क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का प्रयास है, बल्कि कुँवरगढ़ के विकास के लिए एक नए स्वर्णिम अध्याय की शुरुआत भी माना जा रहा है।तीन दिवसीय इस महोत्सव में छत्तीसगढ़ की माटी से जुड़े लगभग 15 सुप्रसिद्ध कलाकार अपनी

प्रस्तुति देंगे। लोक संगीत, पारंपरिक नृत्य और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रंगारंग महफ़िल दर्शकों को राज्य की समृद्ध कला और संस्कृति से रूबरू कराएगी।महोत्सव की भव्यता को और बढ़ाने के लिए आयोजन स्थल पर विशाल सामान्य मेला एवं व्यापार मेले का भी आयोजन किया जा रहा है। इससे स्थानीय व्यापारियों, महिला स्व-सहायता समूहों और कारीगरों को अपने उत्पादों के प्रदर्शन और विक्रय के लिए बड़ा मंच मिलेगा।क्षेत्रवासियों में इस आयोजन को लेकर उत्साह का माहौल है। लोगों ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि वर्षों से उपेक्षित पड़े कुँवरगढ़ के ऐतिहासिक गौरव को अब नई पहचान मिलने जा रही है। उनका कहना है कि यह महोत्सव न केवल सांस्कृतिक धरोहर को पुनर्जीवित करेगा, बल्कि स्थानीय व्यापार और पर्यटन को भी नई ऊंचाई प्रदान करेगा।

विधायक अनुज शर्मा ने क्षेत्रवासियों से अपील की है कि वे सपरिवार इस प्रथम कुँवरगढ़ महोत्सव में शामिल होकर इसे ऐतिहासिक बनाएँ और अपनी गौरवशाली परंपराओं का हिस्सा बनें।

उर्वरकों की कालाबाजारी पर सख्तीः खरीफ2026 के लिए जिला स्तरीय उड़नदस्ता टीम गठित

बेमेतरा/मूक पत्रिका

खरीफ 2026 मौसम हेतु किसानों को निर्धारित मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण उर्वरकों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए जिला प्रशासन बेमेतरा द्वारा सख्त कदम उठाए गए हैं। इसी कड़ी में उर्वरक की कालाबाजारी, तस्करी, डायवर्सन, जमाखोरी, अधिक कीमत पर विक्रय एवं अमानक उर्वरकों की बिक्री जैसी अवैध गतिविधियों पर नियंत्रण हेतु जिला स्तरीय उड़नदस्ता टीम का गठन किया गया है।जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि उर्वरकों से संबंधित किसी भी प्रकार की अनियमितता पाए जाने पर संबंधित व्यक्ति या फर्म के विरुद्ध प्रतिबंधात्मक कार्यवाही के साथ-साथ पुलिस में प्राथमिकी दर्ज कराते हुए प्रकरण माननीय न्यायालय में प्रस्तुत किया जाएगा।उड़नदस्ता टीम का गठन इस प्रकार हैःडॉ. श्याम लाल साहू, उर्वरक निरीक्षक, विकासखंड बेमेतरा (सहायक संचालक कृषि) ङ्क नोडल अधिकारीश्री दिनेश कुमार धुर्वे, प्रभारी वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, विकासखंड साजा ङ्क सहायक नोडलश्री देवानंद देवांगन, प्रभारी वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, विकासखंड बेरला ङ्क सहायक नोडलश्री राकेश कुमार चतुर्वेदी, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, विकासखंड नवागढ़ ङ्क सहायक नोडलश्री दीपक कुमार साहू, उर्वरक शाखा प्रभारी ङ्क उप सहायक कुलेश्वर सिन्हा, वाहन चालकउक्त टीम उर्वरकों से संबंधित शिकायतों एवं गोपनीय सूचनाओं पर त्वरित कार्रवाई करेगी। साथ ही, उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 (स्नष्टह्र 1985) के तहत अवैध गतिविधियों पर तत्काल कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी। टीम द्वारा की गई कार्रवाई का साप्ताहिक प्रतिवेदन प्रत्येक गुरुवार (कार्यालयीन दिवस) को प्रस्तुत किया जाएगा तथा वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशानुसार समन्वय स्थापित करते हुए कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी।जिला प्रशासन ने किसानों से अपील की है कि वे किसी भी प्रकार की अनियमितता की सूचना तत्काल संबंधित अधिकारियों को दें, ताकि समय पर उचित कार्रवाई की जा सके।

जनदर्शन में कलेक्टर सुश्री प्रतिष्ठा ममगाईं ने आमजन की समस्याएं सुनीं

जनदर्शन में प्राप्त हुए 51 आवेदन, कई मामलों का मौके पर निराकरण

बेमेतरा/मूक पत्रिका

जिले में आम नागरिकों की समस्याओं के त्वरित एवं प्रभावी निराकरण के उद्देश्य से प्रत्येक सोमवार को आयोजित होने वाले जनदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत आज कलेक्टरेट स्थित दृष्टि सभा कक्ष में जनदर्शन का आयोजन किया गया। जनदर्शन में कलेक्टर सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई ने जिले के विभिन्न क्षेत्रों से पहुंचे नागरिकों की समस्याएं गंभीरता से सुनीं। जनदर्शन के दौरान नागरिकों ने अपनी विभिन्न मांगों, शिकायतों एवं समस्याओं को प्रशासन के समक्ष रखा। कलेक्टर सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई ने प्राप्त आवेदनों पर संवेदनशीलता के साथ संज्ञान लेते हुए संबंधित विभागीय

अधिकारियों को दूरभाष पर एवं समक्ष बुलाकर प्रकरणों के शीघ्र निराकरण के निर्देश दिए। कई प्रकरणों का समाधान मौके पर ही किया गया। आज आयोजित जनदर्शन में विभिन्न विभागों से संबंधित कुल 51 आवेदन प्राप्त हुए। तात्कालिक महत्व के मामलों का प्राथमिकता से निराकरण किया गया, जबकि गंभीर एवं जांच योग्य आवेदनों को समय-सीमा (टीएल) पंजी में दर्ज कर नियमानुसार शीघ्र निराकरण के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए गए। जनदर्शन में निराश्रित एवं वृद्धावस्था पेंशन, दिव्यांग पेंशन, बैटरी चालित ट्रायसायकल, प्रधानमंत्री आवास योजना, कटा हुआ रकबा जोड़ने, खाद गड्ढा हटाने, आम रास्ता खुलवाने सहित अन्य जनहित से जुड़े विषयों पर आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्टर ने सभी आवेदकों को उनकी समस्याओं के शीघ्र समाधान का आश्वासन दिया। इस अवसर पर अपर कलेक्टर गुड्डूलाल जगत सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे, जिससे जनदर्शन की प्रक्रिया सुचारू एवं प्रभावी रही।

जल जीवन मिशन से बदली ग्राम किरीतमाल की तस्वीर

रायगढ़/मूक पत्रिका

जहां कभी हर सुबह पानी की चिंता के साथ शुरू होती थी, आज वही दिन सुकून, सुविधा और मुस्कान के साथ गुजर रहा है। यह बदलाव है ग्राम किरीतमाल के लोगों के जीवन में, जिनकी दिनचर्या जल जीवन मिशन के चलते पूरी तरह बदल चुकी है। जिला रायगढ़ के विकासखंड खरसिया से लगभग 30 किलोमीटर दूर बसे किरीतमाल गांव में कुछ साल पहले तक पानी की भारी किल्लत थी। एक साधारण किसान परिवार की गृहिणी तनूजा यादव के लिए हर दिन की शुरुआत पानी की व्यवस्था से होती थी। गांव में कुछ सीमित हैंडपंप ही पानी का एकमात्र साधन थे, जिनसे पानी लाने के लिए उन्हें लंबी दूरी तय करनी पड़ती थी। कई बार दिन में दो से तीन बार चक्कर लगाना उनकी मजबूरी थी। गर्मियों में स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण हो जाती थी। हैंडपंप सूख जाते, और जो चलते भी थे, वहां लंबी कतारें लगी रहती थीं। घंटों इंतजार करने के बाद भी पर्याप्त पानी मिलना मुश्किल होता था। इस रोजमर्रा के संघर्ष ने न केवल उनका समय और ऊर्जा छीनी, बल्कि परिवार की दिनचर्या और बच्चों की पढ़ाई पर भी गहरा असर डाला। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू की गई जल जीवन मिशन योजना इस गांव के लिए किसी वरदान से कम नहीं साबित हुई।

बिजली की रोशनी में हार-जीत का दांव लगा रहे जुआरियों पर पुलिस का छापा, तीन सलाखों के पीछे

कांकेर/मूक पत्रिका

पुलिस ने अपराध नियंत्रण अभियान के तहत एक बड़ी कार्रवाई करते हुए जुआ खेलते तीन आरोपियों को रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मौके से ताश के पत्तों के साथ हजारों रुपये की नकदी जब्त की है।

पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि कोरर स्कूल मैदान में बिजली की रोशनी जलाकर कुछ लोग ताश के पत्तों पर हार-जीत का दांव लगा रहे हैं। सूचना मिलते ही पुलिस अधीक्षक निखिल राखेचा और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक योगेश साहू के निर्देशन में एक टीम तैयार की गई। पुलिस टीम ने घेराबंदी कर मौके पर छापा मारा, जिससे जुआरियों में हड़कंप मच गया।

पुलिस ने मौके से तीन आरोपियों - धर्मेंद्र सेन (35 वर्ष), उमाशंकर टेमुन्ना (43 वर्ष) और हेमराज सिंह (50 वर्ष) को हिरासत में लिया। इनके कब्जे से कुल 17,460 रुपये नगद, ताश के 52 पत्ते और एक प्लास्टिक की चटाई बरामद की गई। आरोपियों के खिलाफ छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिषेध अधिनियम 2022 की धारा 3(2) के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई की गई है।

पुलिस टीम की भूमिका :

इस सफल कार्रवाई में निरीक्षक जितेन्द्र गुप्ता, प्र.आर. लोकेश रावटे, आरक्षक भारत दुग्गा, दुवारू राम मंडावी, मनोज साहू, लल्ली मंडावी और अन्य स्टाफका विशेष योगदान रहा।

बेमेतरा पुलिस की बड़ी कार्रवाई : 15 क्विंटल चोरी का धान बरामद, एक आरोपी गिरफ्तार

बेमेतरा/मूक पत्रिका

जिले में अवैध गतिविधियों और अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए बेमेतरा पुलिस लगातार प्रभावी कार्रवाई कर रही है। पुलिस उप महानिरीक्षक रामकृष्ण साहू के निर्देशन में साइबर सेल एवं थाना परपोडी पुलिस की संयुक्त टीम ने धान चोरी के एक मामले का खुलासा करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार ग्राम भटगांव निवासी रामखिलावन सेन (68 वर्ष) ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि 21 मार्च की शाम से 22 मार्च की सुबह के बीच अज्ञात चोर ने उनके कोठार (ब्यारा) के कमरे का ताला तोड़कर वहां रखे 105 कट्टा धान में से 38

कट्टा धान चोरी कर लिया। चोरी गए धान का कुल वजन लगभग 15 क्विंटल और कीमत करीब 45 हजार रुपये बताई गई।मामले की गंभीरता को देखते हुए साइबर सेल प्रभारी निरीक्षक मयंक मिश्रा एवं थाना प्रभारी परपोडी निरीक्षक सत्य प्रकाश उपाध्याय के नेतृत्व में संयुक्त टीम ने जांच शुरू की। विवेचना के दौरान मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर ग्राम भटगांव निवासी प्रेमलाल उर्फ सुमित सेन को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। पूछताछ में आरोपी ने चोरी करना स्वीकार कर लिया।आरोपी की निशानदेही पर पुलिस ने चोरी गए 38 कट्टा धान (लगभग 15 क्विंटल) बरामद कर जब्त कर लिया। बरामद धान की कीमत लगभग 45 हजार रुपये आंकी गई है।पुलिस ने आरोपी प्रेमलाल उर्फ सुमित सेन (27 वर्ष), निवासी भटगांव, थाना परपोडी को 29 मार्च को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया।इस कार्रवाई में साइबर सेल एवं थाना परपोडी के अधिकारियों और पुलिस स्टाफ की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पुलिस की इस तत्पर कार्रवाई की क्षेत्र में सराहना की जा रही है।

यदि चाहें तो मैं इसे ÷ब्रेकिंग न्यूज़÷ शैली में आकर्षक हेडलाइन और सोशल मीडिया पोस्ट फॉर्मेट में भी बना सकता हूँ।

जियोलॉजी और प्रशासनिक प्रबंधन की अहम भूमिकाः डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव

वाटरशेड मैनेजमेंट में जनजागरूकता

रायपुर /मूक पत्रिका

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग के भूगर्भशाला के प्राध्यापक डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव ने कहा कि वाटरशेड मैनेजमेंट में जनजागरूकता, जियोलॉजी एवं प्रशासनिक प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने प्रत्येक नागरिक से जल संरक्षण के लिए अपने स्तर पर प्रयास करने का आह्वान किया। वे गत दिवस सिविल लाइन्स स्थित सर्किट हाउस में भारतीय लोक प्रशासन संस्थान की छत्तीसगढ़ क्षेत्रीय शाखा द्वारा आयोजित ÷वाटरशेड मैनेजमेंट इन छत्तीसगढ़÷ विषय पर व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित कर

रहे थे। कार्यक्रम का शुभारंभ एवं स्वागत कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान के सचिव अनूप कुमार श्रीवास्तव द्वारा मुख्य वक्ता के परिचय एवं विषय की रूपरेखा प्रस्तुत करने से हुई। संस्थान के अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्य सचिव सुयोग्य कुमार मिश्रा ने पुष्पगुच्छ भेंट कर डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव का स्वागत किया। छत्तीसगढ़ की भू-वैज्ञानिक स्थिति पर विस्तृत जानकारी दी द्य अपने व्याख्यान में डॉ. श्रीवास्तव ने छत्तीसगढ़ की भू-वैज्ञानिक परिस्थितियों, विभिन्न प्रकार की चट्टानों तथा सतही एवं भूमिगत जल भंडारों का विस्तृत वर्णन किया। उन्होंने बताया कि रेनवॉटर हार्वेस्टिंग एवं रिचार्ज पिट भूमिगत जल भंडारण को बढ़ाने में अत्यंत सहायक हैं। जल संरक्षण एवं फ़सल विविधीकरण पर जोर डॉ. श्रीवास्तव ने जल के दुरुपयोग को रोकने के लिए उचित शुल्क (चार्ज) लगाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने धान के खेतों को रेनवॉटर हार्वेस्टिंग का प्रमुख स्रोत बताते हुए किसानों को धान के साथ अन्य फ़सलों की ओर भी ध्यान देने की सलाह दी। भूमिगत जल स्थिति का प्रस्तुतीकरण व्याख्यान के दौरान बेमेतरा, नवागढ़ एवं बलौदाबाजार क्षेत्रों में भूमिगत जल की स्थिति का पावरपॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से प्रभावी चित्रण किया गया।

प्रश्नोत्तर एवं आभार प्रदर्शन

कार्यक्रम के अंत में उपस्थित पूर्व मुख्य सचिव सुयोग्य कुमार मिश्रा, पूर्व अपर मुख्य सचिव श्रीमती इंदिरा मिश्रा, दिनेश श्रीवास्तव, आर.एस. विश्वकर्मा, ललित सिंघानिया, तिलकसेन गुप्ता एवं अनूप कुमार श्रीवास्तव द्वारा पूछे गए प्रश्नों का डॉ. श्रीवास्तव ने समाधान किया।अंत में संस्थान के सचिव अनूप कुमार श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापन एवं आभार प्रदर्शन किया।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक आशिष कुमार कंठले द्वारा कलयुग का भारत द्वारा अग्रदूत कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, भाजपा कार्यालय के पास, रायपुर, जिला-रायपुर (छ.ग.)-492001 से मुद्रित एवं वार्ड नंबर 18 बाजार पारा बेमेतरा पोस्ट व जिला बेमेतरा छ.ग. पिन कोड 491335 से प्रकाशित । संपादक आशिष कुमार कंठले समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार मो. नं. 7999238079, 7828658259, समस्त विवादों का निपटारा बेमेतरा न्यायालय होगा।